सत्यमेव जयते

दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका

बैंक भारती

अंक 32, जुलाई–दिसंबर, 2024

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

: संयोजक :

पंजाब नैशनल बैंक
...भरासे का प्रतीक!

punjab national bank
...the name you can BANK upon!

हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अंतर्गत "भारतीय भाषा अनुभाग" की स्थापना का तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के सहयोग से अद्यतित किये गए कंठस्थ 2.0 अनुवाद टूल का लोकार्पण करते हुए माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह। दृष्टव्य हैं केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानन्द राय, श्री हरिवंश नारायण सिंह, उप सभापति, राज्य सभा, सचिव राजभाषा, सुश्री अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव, डॉ. मीनाक्षी जौली एवं हिंदी के प्रख्यात विद्वजन।

हिंदी दिवस के अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14–15 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के मंच पर उपस्थित श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री नित्यानन्द राय, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, सचिव राजभाषा, सुश्री अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव, डॉ. मीनाक्षी जौली एवं हिंदी के प्रख्यात विद्वजन।

दिल्ली बैंक नराकास

बैंक भारती

छमाही पत्रिका

वर्ष : 27 | अंक : 32 | जुलाई–दिसंबर, 2024

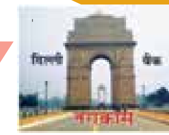

संरक्षक

प्रवीन गोयल
अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास
एवं मुख्य महाप्रबंधक, दिल्ली अंचल, पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादक

मनीषा शर्मा
सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास
एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादकीय समिति

आशीष शर्मा
मुख्य प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

राजीव शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

परामर्शदात्री समिति

निखिल शर्मा	मुख्य प्रबंधक	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
रूखसार आलम	प्रशासनिक अधिकारी राजभाषा	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
शैलेन्द्र कौशिक	राजभाषा अधिकारी	भारतीय जीवन बीमा निगम

आवरण पृष्ठ के बारे में...

राष्ट्रपति भवन

अनुक्रमणिका

1.	अमित शाह, गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार	2
2.	अध्यक्ष की कलम से ...	4
3.	सम्पादकीय ...	5
4.	चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन; दिल्ली	6
5.	आधुनिक बैंकिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	7
6.	कला और वास्तुकला का केंद्र–दिल्ली	10
7.	हिंदी दिवस समारोह	12
8.	पैसे और रिश्तों का तालमेल	13
9.	पुरस्कार	14
10.	सौर ऊर्जा क्षेत्र में प्रभुत्व प्राप्त करने हेतु भारत के प्रयास	15
11.	बढ़ता है आत्मविश्वास तो बढ़ जाती हैं क्षमताएं	17
12.	स्त्री : अब तुम मधुसूदन बनो (कविता)	18
13.	पीएनबी ने किया "डिजिटल बैंकिंग" पर अखिल भारतीय...	19
14.	यात्रावृत्तांत – जगदलपुर, छत्तीसगढ़ की यात्रा	20
15.	भारतीय रिज़र्व बैंक की राजभाषा गतिविधियाँ	22
16.	इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक की राजभाषा गतिविधियाँ	23
17.	दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60वीं छमाही बैठक	24
18.	अंतर्मन और जीवन/ यादों की आहटें (कविताएं)	27
19.	एक सैनिक की संवेदना/ मेरी गोवा यात्रा (कविताएं)	28
20.	आईडीबीआई बैंक लिमिटेड द्वारा'हदी पखवाड़े का आयोजन/ दास्तां–ए–उल्फ़त (कविता)	29
21.	छोटे प्रयास का बड़ा बदलाव	30
22.	आज ही क्यों नहीं ?	31
23.	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय की राजभाषा गतिविधियाँ/ भारतीय जीवन बीमा निगम, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़ा सम्मान समारोह का आयोजन	32
24.	गुरु/ बचपन का सफर (कविताएं)	33
25.	और हम बड़े हो गए (कविता)	34
26.	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्याल्य द्वारा हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन/विश्वास की राह	35
27.	कुम्हार का माटी प्रेम	36
28.	हिन्दी पखवाड़ा/हिंदी उत्सव (कविताएं)	37
29.	असमंजस	38
30.	प्रकृति की सुंदरता (कविता)	39
31.	नराकास द्वारा कंठस्थ 2.0 पर कार्यशाला का आयोजन/ बैंक ऑफ इंडिया द्वारा हिंदी माह का आयोजन	40
32.	अरुणिमा सिन्हा की अदम्य जिजीविषा	41
33.	दिल्ली बैंक नराकास द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन	42
34.	दिल्ली बैंक नराकास द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड–2024 प्रतियोगिताओं के परिणाम	43
35.	दिल्ली बैंक नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयो द्वारा कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान आयोजित अंतर कार्यालय प्रतियोगिताओं के परिणाम	44

–: सम्पर्क सूत्र :–
बैंक भारती, दिल्ली बैंक नराकास सचिवालय, पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग प्लॉट नं–4, प्रथम तल, द्वारका सेक्टर–10, नई दिल्ली–110075
ई–मेल : delhibanknarakas@pnb.co.in ♦ **दूरभाष** : 28044450, 28044491

पत्रिका को डाउनलोड करने के लिए कृपया आवरण पृष्ठ पर दिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से 'समिति' का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्रक :– **डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स**
1ई/18, चौथी मंजिल, झंडेवालान, दिल्ली–110055, **ई–मेल:** dolphinprinto2011@gmail.com

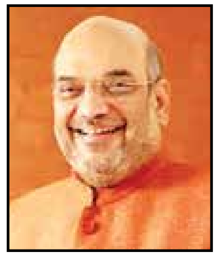

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर–हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन–वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन–जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहरी बाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू–कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिवद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वीं खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान–विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन–जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

(अमित शाह)

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024

अध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय साथियो,

देश की सर्वश्रेष्ठ नराकासों में शामिल दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष का दायित्व ग्रहण करने के उपरांत नराकास की छमाही पत्रिका ''बैंक भारती'' के माध्यम से आप सबके साथ संवाद स्थापित करना मेरे लिए अत्यंत ही सुखद और गौरवमयी है।

सर्वप्रथम, आप सबको क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, क्षेत्र उत्तर–1 द्वारा घोषित पुरस्कारों में हमारी नराकास को प्राप्त द्वितीय राजभाषा सम्मान के लिए बहुत–बहुत बधाई। निश्चित ही यह एक बड़ी उपलब्धि है लेकिन हमें इससे संतुष्ट नहीं होना है। हमारा लक्ष्य प्रथम स्थान है और हम सबको इसके लिए निरंतर अपनी उपलब्धियों को निखारते रहना है।

गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग की अपेक्षाओं और निर्देशानुसार राजभाषा के प्रचार–प्रसार और कार्यान्वयन में दिल्ली बैंक नराकास सदैव ही अग्रणी पंक्ति में रहती है। वर्ष भर हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन, तिमाही दर तिमाही कार्यशालाओं का आयोजन, संगोष्ठियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, हिंदी माह/पखवाड़ा, हिंदी दिवस, वार्षिक समारोह, राजभाषा मुख्य समारोह, शील्ड वितरण आदि अनेकों कार्यों का नियमित और ससमय आयोजन निश्चित ही इसे विशेष बनाता है और साथ ही एक स्तरीय हिंदी पत्रिका 'बैंक भारती' का छमाही प्रकाशन इसे अग्रणी श्रेणी में ला खड़ा करता है।

कैलेंडर वर्ष की यह द्वितीय छमाही हमारी नराकास और इस देश के लिए भी विशेष होती है। नराकास स्तर पर हम कैलेंडर वर्ष के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हैं, राजभाषा के उत्कृष्ट अनुपालन करने वाले कार्यालयों को श्रेणीवार (बैंक, वित्तीय संस्थान और बीमा कंपनियाँ) शील्ड प्रदान करते हैं, सदस्य कार्यालयों द्वारा वित्त वर्ष के दौरान प्रकाशित गृह पत्रिकाओं और ई–पत्रिकाओं को अलग–अलग श्रेणी में शील्डों से सम्मानित करते हैं, 'बैंक भारती' के गत दो अंकों में प्रकाशित रचनाओं को कविता, कहानी, बैंकिंग संबंधी लेख तथा अन्य विषयक लेख श्रेणी में पुरस्कृत करते हैं। उक्त सभी प्रयास निश्चित ही सदस्य कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इस छमाही में स्वतन्त्रता दिवस का आयोजन, हिंदी दिवस और हिंदी सम्मेलन का आयोजन, बुराई पर अच्छाई की जीत का उत्सव, भारतीय संविधान को अपनाए जाने का जश्न जैसे राष्ट्रीय पर्व इस छमाही को प्रत्येक भारतीय के लिए विशेष बनाते हैं।

दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्षीय कार्यभार को ग्रहण करने पर मैंने पाया है कि सभी सदस्य कार्यालय चाहे वे बैंकिंग से हों या वित्तीय संस्थान हों या फिर बीमा कंपनियाँ ही क्यों न हों, सभी एक टीम की भांति कार्य करते हैं और आपसी प्रतिस्पर्धा के साथ–साथ देशभर की अन्य नराकासों को भी प्रतिस्पर्धा देते हैं। हमारा आपसी समन्वय ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिल्ली बैंक नराकास में पत्रिका के प्रकाशन से लेकर बैठकों के आयोजनों तक सभी गतिविधियाँ/कार्य ससमय किए जाते हैं। निश्चित ही समस्त सदस्य कार्यालयों के सहयोग से हम यह उपलब्धियां हासिल कर पाए हैं। हमें इस टीम भावना और अनुशासन को बनाए रखना है। मुझे यह भी बताया गया है कि छमाही बैठकों में सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख स्वयं अपने राजभाषा अधिकारी के साथ उपस्थित रहते हैं और यही कारण है कि हमारी नराकास निर्विघ्नता से सभी दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजभाषा के कार्यान्वयन को सहज और सुलभ बनाती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब इसी प्रकार से एक टीम के रूप में कार्य करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में नित नई ऊँचाइयाँ छूते रहेंगे।

आपको और आपके परिवार को आने वाले नव–वर्ष की शुभकामनाएँ।

आपका

प्रवीन गोयल

(प्रवीन गोयल)

अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास एवं

मुख्य महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, दिल्ली –एनसीआर अंचल

सम्पादकीय ...

प्रिय साथियो,

दिल्ली बैंक नराकास के स्टाफ सदस्यों की ज्ञानप्रद रचनाओं और राजभाषा संबंधी गतिविधियों से सुसज्जित नराकास की छमाही पत्रिका ''बैंक भारती'' का 32वां अंक नई साज–सज्जा में आप सबके समक्ष है। मुझे आशा है कि यह अंक आप सभी के लिए ज्ञानवर्धक एवं रोचक होगा।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा दिनांक 03 दिसंबर, 2024 को घोषित पुरस्कारों में 'नराकास राजभाषा सम्मान' में दिल्ली बैंक नराकास को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है जिसके लिए आप सभी को अशेष बधाई। देश की सर्वश्रेष्ठ नराकासों में शामिल हमारी नराकास को प्रथम पायदान पर रखना ही हम सभी का ध्येय है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सब एक टीम की तरह कार्य करते हुए अपनी इस नराकास को प्रथम पायदान पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध होकर निष्ठा से कार्य करते रहेंगे।

दिनांक 14–15 सितंबर, 2024 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा 'हिन्दी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' का आयोजन भारत मंडपम, नई दिल्ली में किया गया। हम सबके लिए यह एक गौरवशाली क्षण था क्योंकि हम सब इस भव्य आयोजन के न केवल साक्षी थे अपितु सफल आयोजन का हिस्सा भी थे। राजभाषा के इस महान संगम के आयोजन में आप सभी सदस्य कार्यालयों और राजभाषा से जुड़े स्टाफ सदस्यों को उनके द्वारा दिए गए योगदान और सहयोग के लिए साधुवाद।

हमारा भारत आज विश्व पटल पर एक सशक्त राष्ट्र बनकर उभर रहा है। विश्व के सभी राष्ट्र वैश्विक मुद्दों पर न केवल हमारी सोच की सराहना करते हैं अपितु हमारी संस्कृति और भाषा को भी सम्मान देते हैं। अभी हाल ही में संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन द्वारा मनाए गए हिन्दी दिवस के आयोजन में संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग (डीजीसी) के निदेशक श्री इयान फिलिप्स ने हिंदी की वैश्विक पहुँच को वास्तव में प्रभावशाली बताते हुए कहा कि दुनिया भर में 60 करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते हैं। अंग्रेजी और मंदारिन के बाद हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। जब दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बोलबाला है, ऐसे में भारत को इसमें प्रमुख भूमिका निभानी है और हिंदी भाषा अगली पीढ़ी के नेताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले करोड़ों लोगों के साथ संवाद करने का प्रमुख माध्यम बनी हुई है।''

नराकास स्तर पर हम सभी मिलजुल कर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जुटे हुए हैं और हमारे इन्हीं एकजुट प्रयासों ने हमारी नराकास को देश की सभी नराकासों की अग्रिम पंक्ति में रखा हुआ है। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने हाल ही में जारी कार्यालय ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के प्रोत्साहन हेतु सभी नराकासों को तीन श्रेणियों 'सर्वश्रेष्ठ', 'उत्कृष्ट' तथा 'प्रशंसनीय' में वर्गीकृत किया गया है। इन श्रेणियों की पात्रता हेतु कुछ मानदंड निर्धारित किए गए हैं जो आप सभी को परिचालित किए गए हैं। मुझे विश्वास है कि दिल्ली बैंक नराकास के सभी सदस्य कार्यालय अपनी नराकास को सर्वश्रेष्ठ श्रेणी में बनाए रखने के लिए पूर्व की भांति सहयोग देते हुए नव निर्धारित मानदंडों के अनुरूप भी खरा उतरेंगे।

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न शील्ड प्रतियोगिताओं तथा वर्ष भर आयोजित की जाने वाली अंतर बैंक हिंदी प्रतियोगिताओं के परिणाम इस अंक में प्रकाशित किए गए हैं। सभी विजेताओं को बधाई देते हुए मैं अपेक्षा करती हूँ कि वे अपने हिंदी प्रेम और ज्ञान को न केवल अपने कार्यालयी कामकाज में उतारेंगे अपितु अपने सहयोगियों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे।

आने वाले नव नर्ष के लिए आपको एवं आपके परिवारजनों को मंगलकामनाएँ।

(मनीषा शर्मा)
सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास एवं
सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन; दिल्ली

(14–15 सितंबर, 2024 : भारत मंडपम, दिल्ली)

हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी प्रेमियों को संबोधित करते हुए माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 14–15 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का भव्य आयोजन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह एवं माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री नित्यानन्द राय, श्री हरिवंश नारायण सिंह, उप सभापति, राज्य सभा, डॉ. सुधांशु त्रिवेदी, संसद सदस्य, राज्य सभा, श्री अजय कुमार मिश्रा, पूर्व गृह राज्य मंत्री, श्री अर्जुन राम मेघवाल, केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग से सचिव राजभाषा, श्रीमती अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव, डॉ. मीनाक्षी जौली एवं हिंदी के प्रख्यात विद्वान डॉ. कुमार विश्वास, हिंदी कवि एवं व्याख्याता, प्रो. विमलेश कांति वर्मा, भाषाविद्, प्रो. एस. तंकमणि अम्मा, भाषाविद्, केरल विश्वविद्यालय, प्रो.गिरीशनाथझा,अध्यक्ष,वैज्ञानिकएवंतकनीकीशब्दावलीआयोग, प्रो. सुनील बाबू राव कुलकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, डॉ. इश्फाक अली, लेखक एवं शिक्षविद्, बेंगलुरु, प्रो. संगीत रागी, लेखक एवं कवि, श्री तुषार मेहता, भारत के महासॉलिसिटर, श्री अनुपम खेर, अभिनेता, श्री चन्द्रप्रकाश द्विवेदी, फिल्म निर्माता एवं निदेशक व अन्य प्रतिष्ठित विद्वान उपस्थित रहे। माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी ने हिंदी दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है। आज का दिन हिंदी में संपर्क, जनभाषा, तकनीक और अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने का दिन है।

इस अवसर पर माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अंतर्गत ''भारतीय भाषा अनुभाग'' की स्थापना का तथा अद्यतित कंठस्थ 2.0 अनुवाद टूल तथा हीरक जयंती स्मारिका का लोकार्पण किया। राजभाषा हीरक जयंती वर्ष के अवसर पर श्री अमित शाह ने एक डाक टिकट तथा स्मारक सिक्का भी जारी किया।

हिंदी दिवस के अवसर पर व्याख्यान देते हुए श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पीएनबी।

दिनांक 15.09.2024 को सम्मेलन के द्वितीय सत्र में श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी पंजाब नैशनल बैंक ने तकनीक के दौर में **''राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में "नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति" का योगदान''** विषय पर बहुत प्रभावशाली और ज्ञानप्रद व्याख्यान दिया।

आधुनिक बैंकिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

नेहा अग्रवाल
वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
पार्लियामेंट स्ट्रीट शाखा
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली, दक्षिण
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

जैसे–जैसे डिजिटल परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों में फैल रहा है, बैंक अपनी सेवाओं को बढ़ाने, परिचालन दक्षता में सुधार करने और बेहतर ग्राहक अनुभव प्रदान करने के लिए तेजी से एआई का उपयोग कर रहे हैं।

बैंकिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को शामिल करना सिर्फ़ एक चलन नहीं है, बल्कि डिजिटल युग में यह ज़रूरी है। NLP, मशीन लर्निंग और रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (RPA) सहित AI तकनीकें बैंकों को संचालन को सुव्यवस्थित करने, व्यक्तिगत ग्राहक अनुभव प्रदान करने और सुरक्षा बढ़ाने में सक्षम बनाती हैं।

एआई द्वारा संचालित वैश्विक फिनटेक सॉफ्टवेयर विकास बाजार अभूतपूर्व दर से बढ़ रहा है। फिनटेक बाजार का आकार 2021 में लगभग 8.23 बिलियन डॉलर था और 2031 तक लगभग 61.30 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जो 2022 से 2031 तक 22.50% की सीएजीआर से बढ़ रहा है।

बैंकिंग में एआई के शीर्ष लाभ

बैंकिंग में एआई को अपनाने से उद्योग के विभिन्न परिचालन और ग्राहक–संबंधी पहलुओं में अनेक लाभ होंगे जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण लाभ इस प्रकार हैं

1. उन्नत ग्राहक अनुभव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वित्तीय मामलों में व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करके और प्रतिक्रिया समय को कम करके ग्राहक अनुभव को बढ़ाती है। उदाहरण के लिए, चैटबॉट चौबीसों घंटे ग्राहकों के विभिन्न प्रश्नों का समाधान कर सकते हैं, तत्काल सहायता प्रदान कर सकते हैं। इस तरह बचे हुए समय का उपयोग मानव एजेंट अधिक जटिल मुद्दों से निपटने के लिए कर सकते हैं।

- एआई–संचालित वर्चुअल असिस्टेंट प्राकृतिक भाषा को प्रोसेस कर सकते हैं, ग्राहक के इरादे को समझ सकते हैं और सटीक और तेज़ी से जवाब दे सकते हैं। इससे ग्राहक संतुष्टि और वफ़ादारी बढ़ती है, क्योंकि ग्राहकों को लगता है कि उनकी ज़रूरतें तुरंत और कुशलता से पूरी की जा रही हैं।
- इसके अलावा, एआई–संचालित अनुशंसा इंजन ग्राहक डेटा का विश्लेषण करके अनुकूलित उत्पाद सुझाव प्रदान करते हैं।
- ग्राहक के लेन–देन के इतिहास, प्राथमिकताओं और व्यवहारों का उपयोग करके, इंजन यह अनुमान लगा सकते हैं कि ग्राहक को आगे किन सेवाओं या उत्पादों की आवश्यकता हो सकती है, जिससे उनका बैंकिंग अनुभव बेहतर हो सकता है।
- उदाहरण के लिए, यदि कोई ग्राहक अक्सर यात्रा करता है, तो बैंक उसे यात्रा बीमा या यात्रा पुरस्कार क्रेडिट कार्ड देने की सलाह दे सकता है, जिससे ग्राहक के साथ अधिक व्यक्तिगत और आकर्षक संबंध विकसित हो सकेगा।

2. परिष्कृत निर्णय–प्रक्रिया

एआई–संचालित विश्लेषण बैंकों को ग्राहक व्यवहार, बाजार के रुझान और जोखिम कारकों के बारे में गहन जानकारी देता है। बैंक डेटा–संचालित निर्णय लेने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग कर सकते हैं जो लाभप्रदता बढ़ाते हैं और जोखिम कम करते हैं।

- उदाहरण के लिए, पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण, बाजार की गतिविधियों और ग्राहकों की आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगा सकता है, जिससे बैंकों को अपनी रणनीतियों को सक्रिय रूप से समायोजित करने में सहायता मिलती है।

- एआई उभरते बाजार के रुझान या ग्राहक वरीयताओं में बदलाव की पहचान करने के लिए विशाल डेटासेट का विश्लेषण कर सकता है, जिससे बैंक अपने उत्पाद को तदनुसार अनुकूलित कर सकते हैं।
- इसके अतिरिक्त, एआई पारंपरिक क्रेडिट स्कोर से परे, व्यापक डेटा बिंदुओं, खर्च करने की आदतों और सोशल मीडिया गतिविधियों का विश्लेषण करके ऋण आवेदकों की ऋण पात्रता का अधिक सटीक आंकलन कर सकता है।
- इसकी परिष्कृत निर्णय लेने की प्रक्रिया बैंक के लाभ में सुधार करती है तथा अधिक अनुकूलित वित्तीय समाधान प्रदान करके ग्राहकों के विश्वास और संतुष्टि को बढ़ाती है।

3. बढ़ी हुई दक्षता

रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (RPA) डेटा प्रविष्टि, लेनदेन प्रसंस्करण और अनुपालन जांच जैसे दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित कर सकता है, जिससे परिचालन दक्षता में काफी सुधार होता है। स्वचालन मानवीय त्रुटि की संभावना को कम करता है, प्रक्रियाओं को गति देता है, और कर्मचारियों को उच्च–मूल्य वाले कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है जिनके लिए महत्वपूर्ण सोच और रचनात्मकता की आवश्यकता होती है।

- उदाहरण के लिए, RPA डेटा संग्रह से लेकर स्वीकृति तक ऋण आवेदनों को संसाधित कर सकता है, यह समय किसी व्यक्ति द्वारा लिए जाने वाले समय से बहुत कम है। यह सेवा वितरण को गति देता है और परिचालन लागत को कम करता है।
- एआई बैक–ऑफिस परिचालन को अनुकूलित कर सकता है, ग्राहक रिकॉर्ड का प्रबंधन कर सकता है और वित्तीय रिपोर्ट तैयार कर सकता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सभी कार्य शीघ्रता और सही ढंग से पूरे हों, जिससे समग्र उत्पादकता में वृद्धि होती है।

4. बढ़ी हुई सुरक्षा

बैंकिंग क्षेत्र में सुरक्षा को मजबूत करने में एआई महत्वपूर्ण है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम वास्तविक समय की संदिग्ध गतिविधियों और संभावित धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए विशाल लेनदेन डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं। सुरक्षा के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण जोखिमों को कम करने और ग्राहकों की संपत्तियों की सुरक्षा करने में मदद करता है।

- उदाहरण के लिए, एआई असामान्य लेनदेन पैटर्न की पहचान कर सकता है जो धोखाधड़ी गतिविधि दिखा सकता है, जैसे कि कम समय में कई बड़ी निकासी या अप्रत्याशित स्थानों से लेनदेन।
- मोबाइल ऐप विकास के साथ एआई द्वारा गतिविधियों को तुरंत चिन्हित करके, बैंकों को तत्काल कार्रवाई करने, खातों को फ्रीज करने या ग्राहकों को सचेत करने की अनुमति मिलती है, जिससे संभावित नुकसान को रोका जा सकता है।
- इसके अतिरिक्त, एआई बैंक की प्रणालियों में कमजोरियों की पहचान करके तथा उन्हें साइबर हमलों से बचाने के लिए निवारक उपाय सुझाकर साइबर सुरक्षा को बढ़ा सकता है।
- मशीन लर्निंग मॉडल धोखाधड़ी के सूक्ष्म संकेतों का भी पता लगा सकते हैं, जिससे बैंक महत्वपूर्ण क्षति होने से पहले त्वरित कार्रवाई करने में सक्षम हो जाते हैं।
- धोखाधड़ी की रोकथाम से परे, AI साइबर सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह नेटवर्क ट्रैफ़िक की निगरानी कर सकता है और असामान्य गतिविधियों की पहचान कर सकता है जो साइबर हमले का संकेत दे सकती हैं।
- वे लगातार नए खतरों के बारे में सीखते और अनुकूलन करते हुए तेजी से परिष्कृत होते साइबर अपराधियों के खिलाफ मजबूत सुरक्षा प्रदान करते हैं।

5. बेहतर जोखिम प्रबंधन

एआई बैंकों को जोखिमों की अधिक प्रभावी ढंग से पहचान करने, उनका आकलन करने और उन्हें कम करने के लिए उपकरण प्रदान करके जोखिम प्रबंधन को बढ़ाता है। उन्नत विश्लेषण और मशीन लर्निंग मॉडल ऋण जोखिम, बाजार में उतार–चढ़ाव और संभावित वित्तीय अपराधों की भविष्यवाणी कर सकते हैं, जिससे बैंक अपने हितों की रक्षा के लिए पूर्व–निवारक उपाय कर सकेंगे।

- उदाहरण के लिए, एआई पूर्व और वास्तविक समय के आंकड़ों का विश्लेषण करके ऋण चूक की संभावना का अनुमान लगा सकता है, जिससे बैंकों को अपने ऋण मानदंडों को समायोजित करने और अपने ऋण पोर्टफोलियो को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद मिलेगी।
- इसी प्रकार, एआई वैश्विक आर्थिक संकेतकों और वित्तीय बाजारों की निगरानी कर सकता है, ताकि प्रतिकूल परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाया जा सके और उनका समाधान किया जा सके, जिससे बैंक के निवेश की सुरक्षा हो सके।
- इसकी बेहतर जोखिम प्रबंधन क्षमता बैंकों को अप्रत्याशित घटनाओं के प्रति वित्तीय स्थिरता और लचीलापन बनाए रखने में मदद करती है।

6. सुव्यवस्थित अनुपालन

विनियामक अनुपालन बैंकों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, लेकिन AI इस प्रक्रिया को सरल बना सकता है। AI–संचालित प्रणालियाँ विनियामक मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए लेनदेन और अन्य गतिविधियों की निगरानी कर सकती हैं। वे व्यापक रिपोर्ट और ऑडिट भी तैयार कर सकते हैं, जिससे बैंकों के लिए लगातार विकसित हो रहे नियमों का पालन करना आसान हो जाएगा।

- उदाहरण के लिए, AI स्वचालित रूप से धन शोधन निवारण (AML) और अपने ग्राहक को जानो (KYC) विनियमों के अनुरूप संदिग्ध गतिविधियों का पता लगाने और रिपोर्ट करने के लिए लेनदेन की समीक्षा कर सकता है।

  यह अनुपालन सुनिश्चित करता है और मानव अनुपालन अधिकारियों पर बोझ कम करता है, जिससे वे अधिक जटिल मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

  इसके अतिरिक्त, एआई विनियामक परिवर्तनों पर नज़र रख सकता है और बैंक के अनुपालन प्रोटोकॉल को तदनुसार अद्यतन कर सकता है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि बैंक नवीनतम नियमों का अनुपालन करता रहे।

7. भविष्य बताने वाला विश्लेषक

एआई अनुप्रयोग विकास सेवाओं द्वारा संचालित पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण बैंकों को ग्राहकों की आवश्यकताओं और बाजार के रुझान का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम बनाता है।

एआई पूर्व डेटा का विश्लेषण करके और पैटर्न की पहचान करके भविष्य के व्यवहार और वरीयताओं का पूर्वानुमान लगा सकता है। यह बैंकों को ग्राहकों की मांगों को सक्रिय रूप से पूरा करने के लिए अपने उत्पादों और सेवाओं को अनुकूलित करने में सक्षम बनाता है।

8. ऋण और क्रेडिट निर्णय

एआई आवेदकों की ऋण–पात्रता का शीघ्रतापूर्वक और सटीक मूल्यांकन करके ऋण और ऋण निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है।

मशीन लर्निंग मॉडल ऋण देने से जुड़े जोखिम का आकलन करने के लिए क्रेडिट इतिहास, आय स्तर और खर्च करने की आदतों सहित डेटा बिंदुओं की एक विस्तृत श्रृंखला की जांच कर सकते हैं। इससे तेजी से मंजूरी मिलती है और जोखिम का अधिक सटीक आकलन होता है।

अंतिम निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता निस्संदेह बैंकिंग उद्योग को बदल रही है। एआई विकास कंपनी के माध्यम से एआई बैंकिंग समाधानों की शक्ति का उपयोग करके, बैंक ग्राहक अनुभव को बढ़ा सकते हैं, निर्णय लेने में सुधार कर सकते हैं और संचालन को सुव्यवस्थित कर सकते हैं।

एआई–प्रथम बैंक बनने के लिए रणनीतिक योजना, सावधानी पूर्वक क्रियान्वयन और निरंतर निगरानी की आवश्यकता होती है। जैसे–जैसे फिनटेक बाजार बढ़ता जा रहा है, एआई बैंकिंग में नवाचार के मामले में सबसे आगे रहेगा। जो बैंक फिनटेक सॉफ्टवेयर विकास सेवाओं को अपनाएंगे और प्रौद्योगिकीय बदलाव के साथ तालमेल बिठाएंगे, वे डिजिटल युग में बेहतर सेवाएं प्रदान करने और प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखने में सक्षम होंगे।

बैंकिंग का भविष्य निस्संदेह एआई के साथ जुड़ा हुआ है, और जो लोग इसकी क्षमता का उपयोग करते हैं, वे गतिशील और हमेशा बदलते उद्योग में आगे बढ़ेंगे।

कला और वास्तुकला का केंद्र–दिल्ली

नेत्री शर्मा
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

किसी भी शहर की वास्तुकला और शिल्पकला उस शहर की पहचान होती है। एक ऐसी पहचान जिसकी वजह से वह शहर युगों–युगों तक जाना जाता है। हमारे देश की राजधानी दिल्ली की वास्तुकला और शिल्पकला में भी कुछ ऐसी ऐतिहासिक विशेषताएं हैं जो इस शहर को बाकी शहरों से अलग बनाती हैं।

राजपूत साम्राज्य, दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य और ब्रिटिश राज सहित भारत के कई साम्राज्यों की राजधानी के रूप में, दिल्ली शहर कला और वास्तुकला का केंद्र रहा है। दिल्ली की वास्तुकला हज़ारों वर्षों पुरानी है। जामा मस्जिद और अन्य कई प्राचीन संरचनाओं में इंडो–फ़ारसी कलाकृतियां देखी जा सकती हैं। दिल्ली के छतरपुर मंदिर और बिड़ला मंदिर आदि में दक्षिणी मंदिर वास्तुकला और प्राचीन उत्तर भारत की वास्तुकला का मिश्रण है। इन समामेलनों से पता चलता है कि दिल्ली की कला और शिल्प पर देश के हर क्षेत्र और पड़ोसी देशों के आक्रमणकारियों का प्रभाव है। इस समामेलन के प्रभाव से दिल्ली का एक पक्ष अभी भी प्राचीन शैली की वास्तुकला, पुरानी घुमावदार गलियों, सदियों पुराने बाजारों और पारंपरिक समुदायों के साथ है। पुरानी दिल्ली अभी भी अपने पारंपरिक मूल्यों को धारण किए हुए है; जबकि नई दिल्ली आधुनिकीकरण से समृद्ध हो रही है। संस्कृति में यह विविधता दिल्ली को एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण भी बनाती है।

दिल्ली के वैविध्यपूर्ण इतिहास ने विरासत में इसे समृद्ध वास्तुकला दी है। शहर के सबसे प्राचीन भवन सल्तनत काल के हैं और अपनी संरचना व अलंकरण में भिन्नता लिए हुए हैं। प्राकृतिक रुपाकंनों, सर्पाकार बेलों और क़ुरान के अक्षरों के घुमाव में हिन्दू राजपूत कारीगरों का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। मध्य एशिया से आए कुछ कारीगर, वास्तुकला की सेल्जुक शैली (तुर्की) की विशेषताओं को अपनी कलाकृतियों में समेटे हुए थे। ख़िलज़ी शासन काल तक इस्लामी वास्तुकला में प्रयोग तथा सुधार का दौर समाप्त हो चुका था और इस्लामी वास्तुकला में एक विशेष पद्धति और उपशैली स्थापित हो चुकी थी जिसे पख़्तून शैली के नाम से जाना जाता है। इस शैली की अपनी लाक्षणिक विशेषताएं हैं; जैसे घोड़े के नाल की आकृति वाली मेहराबें, जालीदार खिड़कियां, अलंकृत किनारे, बेल बूटों का काम (बारीक विस्तृत रूप रेखाओं में)।

वास्तुकला की परंपरा में बदलाव :

तुग़लक़ों ने वास्तुकला की परंपरा में बदलाव कर अलंकरण का तत्त्व समाप्त कर दिया इस काल में स्लेटी पत्थरों वाले सीधे सपाट निर्माण को प्राथमिकता दी गई उनकी इमारतों में एक दूसरे पर आधारित छतों वाली सादी मेहराबों, क़ुरान की आयत से खुदे किनारों और भट्टी में रंगी टाइलों को प्रभावशाली ढंग से शामिल किया गया। तुग़लक़ों ने अपने भवनों में सजावट पर कम, और उनकी आकृति की भव्यता पर अधिक ज़ोर दिया। सैयद और लोदी काल में गुंबदीय ढांचे की दो जटिल शैलियां प्रचलित हुईं। निम्न अष्टभुजाकार आकृति वाली शैली जिसका ज़मीनी क्षेत्रफल काफ़ी विशाल होता था; और ऊँची वर्गाकार शैली जिसमें भवन का अग्रभाग चारों ओर से गुजरने वाली पट्टी और फलक श्रृंखला रूपी सजावटी तत्त्व से विभाजित होता था, जो इन्हें दो या तीन मंज़िल जैसे होने का रूप देती प्रतीत होती थी। लोदी काल में बगीचे वाले मकबरों का निर्माण भी हुआ। इस काल की मस्जिदों में मीनारें नहीं होती थी।

दिल्ली की वास्तुकला का वास्तविक गौरव :

दिल्ली की वास्तुकला का वास्तविक गौरव मुग़ल कालीन है। दिल्ली में हुमायूँ का मक़बरा, मुग़ल वास्तुकला का प्रथम महत्त्वपूर्ण नमूना है। हुमायूं के मकबरे को 1565 ई. में उनकी बेगम हमीदा बानो ने बनवाया था। इसमें हमीदा की क़ब्र भी है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कालों में बनी दारा शिकोह फ़ुरुख़सियर तथा आलमगीर द्वितीय आदि की भी क़ब्रें यहीं स्थित हैं। कहा जाता है कि मुग़ल परिवार के तथा उससे संबंधित 90 से अधिक व्यक्तियों की कब्रें इस मकबरे में हैं। 1857 की क्रांति में अंतिम मुग़ल सम्राट बहादुरशाह को मुग़लों ने यहीं कैद किया था। ताजमहल का अग्रगामी यह निर्माण भारत का पहला पूर्ण विकसित बग़ीचे वाला मक़बरा भी है। इसने भारतीय वास्तुकला में ऊँची मेहराबों और दोहरे गुंबदों की शुरुआत करी जो कि मुग़ल वास्तुकला के प्रतिनिधि नमूने लाल किले में दिखाई देते हैं। इसमें निर्मित नक्कारख़ाने, दीवार–ए–आम और दीवार–ए–ख़ास, महल तथा मनोरंजन कक्ष, छज्जे, हमाम, आंतरिक नहरें और ज्यामितीय सौंदर्यबोध के साथ निर्मित बगीचे तथा एक अलंकृत मस्जिद देखते ही बनते हैं।

जामा मस्जिद मुग़लकालीन मस्जिदों की वास्तविक प्रतिनिधि है। यह पहली मस्जिद है, जिनमें मीनारें भी हैं। अधिकांश भवनों में संगमरमर का इस्तेमाल हुआ है; जिनमें नक्क़ाशी तथा बहुरंगी पत्थरों की सजावट के नायाब नमूने हैं।

इसी प्रकार, लाल किले की विशाल लाल बलुआ पत्थर की दीवारें, जो 75 फीट (23 मीटर) ऊँची हैं, महलों और मनोरंजन हॉल, प्रक्षेपित बालकनियों, स्नानघरों और इनडोर नहरों, और ज्यामितीय उद्यानों के एक परिसर को घेरती हैं, साथ ही एक अलंकृत मस्जिद भी है। परिसर की सबसे प्रसिद्ध संरचनाओं में सार्वजनिक दर्शकों का हॉल (दीवान–ए–आम) है, जिसमें एक सपाट छत को सहारा देने वाले 60 लाल बलुआ पत्थर के खंभे हैं, और निजी दर्शकों का छोटा हॉल (दीवान–ए–ख़ास), जिसमें सफ़ेद संगमरमर का एक मंडप है।

बावड़ियां (वन या बावली) भी दिल्ली की समृद्ध स्थापत्य विरासत को दर्शाती हैं। भूमिगत इमारतें– पीने, कपड़े धोने, नहाने और सिंचाई के लिए जल स्रोतों के रूप में और कारवां, तीर्थ यात्रियों और यात्रियों के लिए ठंडे अभयारण्यों के रूप में पूरे भारत में आम हैं – शाही, धनी या शक्तिशाली संरक्षकों द्वारा बनवाई गई थीं। ये संरचनाएँ जटिल इंजीनियरिंग करतब और हिंदू और इस्लामी स्थापत्य शैली दोनों के विशिष्ट उदाहरण थे। उतार–चढ़ाव वाले जल स्तर तक पहुँचने के लिए उन्हें कई मंजिलों पर खोदा गया था। हालाँकि प्रत्येक बावड़ी शैलीगत रूप से भिन्न होती है, लेकिन उन सभी में सतह से पानी तक जाने वाली सीढ़ियाँ शामिल होती हैं। कई ने उल्टे मंदिरों के रूप में भी काम किया, जिसमें स्तंभ–समर्थित छाया मंडप और विस्तृत पत्थर की नक्काशी थी। दिल्ली में बावड़ियों के उदाहरण : अग्रसेन की बावली।

आंग्ल वास्तुकला

दिल्ली की आंग्ल वास्तुकला औपनिवेशिक तथा मुग़लकालीन कला का प्रतीक है। यह वाइसरॉय के आवास संसद भवन और सचिवालय के विशाल भवनों से लेकर आवासीय बंगलों और दफ़्तरों जैसी उपयोगी इमारतों तक वैविध्यपूर्ण है। स्वतंत्र भारत में वास्तुकला ने अपनी अलग उपशैली विकसित करने का प्रयास किया है। देशज तथा पश्चिमी शैली के मिश्रित स्वरूप में स्थानीय उपशैलियों की छटा दिखाई देती है। सर्वोच्च न्यायालय भवन, विज्ञान भवन विभिन्न मंत्रालयों के कार्यालय कनॉट प्लेस के आसपास की इमारतें इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। हाल ही में दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के कुछ वास्तुकार हुए जिन्होंने दिल्ली के परिदृश्य में कुछ आकर्षण भवन जोड़े हैं; जिन्हें उत्तर–आधुनिक कहा जाता है। टीकाकरण संस्थान, भारतीय जीवन बीमा निगम का मुख्यालय और बहाई मंदिर इसके उल्लेखनीय उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली हाट, इंद्रप्रस्थ नगर और सिटी वॉक भी आधुनिक वास्तुकला के अच्छे उदाहरण हैं।

दिल्ली की शिल्पकला

अब हम बात करते हैं दिल्ली की शिल्पकला की। दिल्ली की शिल्पकला में पारंपरिक जरी और मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं। दिल्ली के कुछ पारंपरिक शिल्प इस प्रकार हैं:

कालीन बुनाई : जब अकबर, फारसी बुनकरों को भारत लेकर आए तब मुगल काल के माध्यम से कालीन बुनाई प्रसिद्ध हुई। एक समय ऐसा था जब दिल्ली हेराती कालीनों के निर्माण का एक केंद्र था, जो कि हेरात, अफगानिस्तान में बने लोगों के रास्ते के बाद डिजाइन किए गए थे।

बाँस का काम : दिल्ली, सुनहरी–सफेद सरकंडा घास से बनी कुर्सियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

रत्न, कुंदन और मीनाकारी आभूषण : मुगलों द्वारा कला के स्तर को प्रोत्साहित करने और उपयोग करने के लिए दिल्ली असाधारण प्रकार के गहनों का घर रहा है। मुगल शासन में हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों के समामेलन ने डिजाइनों की समृद्ध विविधता पैदा की और इस दौरान कुंदन की कला को भारत में पेश किया गया।

आइवरी नक्काशी : दिल्ली वह जगह है जहाँ मुग़ल राजकुमारों के प्रभाव में हाथी दांत पर नक्काशी की कला विकसित हुई। हाथी को सजाने वाली चेन और गहने सभी नाजुक रूप से हाथी दांत के एक ठोस टुकड़े से निकले हुए हैं और प्रत्येक लिंक को अलग से उठाया जा सकता है। दिल्ली हाथी दांत के गहने के निर्माण केंद्र के रूप में भी विकसित हुआ है।

चमड़े का केंद्र : मुगल काल के दौरान, दिल्ली चमड़े का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। पारंपरिक चमड़े की जूतियां या सांस्कृतिक जूते और चप्पल, जो कई बार मोती के साथ अलंकृत होते थे, काफी प्रसिद्ध रहे हैं ।

दिल्ली की वास्तुकला और शिल्पकला का यह विविध स्वरूप इसे एक अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है।

हिंदी दिवस समारोह

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के नई दिल्ली अंचल द्वारा महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री राकेश शर्मा की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 25 सितंबर, 2024 को किया गया। कार्यक्रम में हास्य कवि श्री शंभू शिखर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अंचल के स्टाफ सदस्यों ने हास्य कवि श्री शंभू शिखर की हास्य रचनाओं का आनंद लिया।

पैसे और रिश्तों का तालमेल

के. एस. एल. अपर्णा
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली, दक्षिण
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

जीवन में पैसा और रिश्ते, दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक ओर जहां पैसा हमारे आर्थिक संसाधनों और भौतिक जरूरतों को पूरा करता है, वहीं दूसरी ओर रिश्ते हमें भावनात्मक समर्थन और सामजिक सहयोग प्रदान करते हैं। अक्सर देखा गया है कि पैसे से जुड़े मुद्दे रिश्तों में दरार पैदा कर सकते हैं, लेकिन अगर इन दोनों को समझदारी से संभाला जाए, तो दोनों के बीच सामंजस्य बनाए रखा जा सकता है।

रिश्तों में पैसे का प्रभावः एक अनदेखा सत्य

समाज में, खासकर परिवारों में, पैसे को लेकर कई तरह की धारणाएं और परंपराएं हैं। कुछ मामलों में पैसे का अभाव या जरूरतें रिश्तों को जटिल बना सकती हैं। चाहे वह दोस्ती हो, शादी हो, या माता–पिता और बच्चों के बीच का संबंध, पैसे से जुड़ी अपेक्षाएं और फैसले अक्सर भावनात्मक तनाव पैदा कर सकते हैं।

राधिका गुप्ता का दृष्टिकोणः पैसे के प्रति सजगता जरूरी

राधिका गुप्ता, जो वित्तीय विशेषज्ञता के लिए जानी जाती हैं, ने हाल ही में एक एपिसोड में बताया कि पैसे और रिश्तों को संतुलित रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है 'खुला संवाद।' उनके अनुसार, अगर पैसे को लेकर रिश्तों में स्पष्टता और संवाद नहीं है, तो इससे मनमुटाव हो सकता है।

उनके अनुसार, कुछ आवश्यक कदम इस प्रकार हैं:

1. **स्पष्ट संवादः** पैसे से जुड़े सभी मुद्दों पर पारदर्शिता बेहद जरूरी है। रिश्तों में बातचीत और स्पष्टता के माध्यम से वित्तीय निर्णय लेना चाहिए, ताकि दोनों पक्षों को आपसी समझ हो।
2. **उधार और उपहार में अंतरः** राधिका का सुझाव है कि रिश्तों में आर्थिक मदद देते समय सावधानी बरतनी चाहिए। किसी को आर्थिक मदद देने से पहले यह तय कर लेना चाहिए कि यह उधार है या उपहार, ताकि भविष्य में कोई गलतफहमी न हो।
3. **लक्ष्य आधारित वित्तीय योजनाः** हर व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या महिला, को अपने व्यक्तिगत वित्तीय लक्ष्यों को पहले से निर्धारित करना चाहिए। एक मजबूत वित्तीय योजना रिश्तों में आर्थिक स्थिरता और विश्वास पैदा करती है।

महिलाओं के लिए वित्तीय स्वतंत्रता और सशक्तिकरण की अहमियत

आज की दुनिया में, महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और सशक्तिकरण अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। यह सिर्फ उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति के लिए नहीं, बल्कि उनके रिश्तों और समाज में उनकी स्थिति को मजबूत करने के लिए भी आवश्यक है।

1. **आत्मनिर्भरताः** राधिका गुप्ता ने अपने एपिसोड में महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता पर विशेष जोर दिया है। उनका कहना है कि महिलाओं को वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए और अपनी आर्थिक योजना बनानी चाहिए। आत्मनिर्भर महिलाएं न केवल खुद को बल्कि अपने परिवार और समाज को भी सशक्त बना सकती हैं।
2. **आर्थिक नियंत्रणः** परिवारों में अक्सर महिलाएं वित्तीय निर्णयों से दूर रहती हैं, लेकिन यह जरूरी है कि महिलाएं भी इन फैसलों में शामिल हों। इससे न केवल उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि वे परिवार की आर्थिक स्थिति को बेहतर तरीके से समझ और संभाल सकेंगी।
3. **दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षाः** राधिका का सुझाव है कि महिलाएं अपनी दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा को लेकर सजग रहें। बचत, निवेश, और भविष्य की वित्तीय योजना बनाना महिलाओं के लिए आवश्यक है, ताकि वे किसी भी अप्रत्याशित स्थिति का सामना कर सकें। वित्तीय सुरक्षा रिश्तों में स्थिरता और मानसिक शांति का भी आधार बनती है।
4. **समाज में सशक्त भूमिकाः** महिलाएं जब आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, तो वे समाज में अधिक सशक्त

भूमिका निभा सकती हैं। यह न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि उनके परिवारों और समुदायों पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।

महिलाओं के लिए राधिका गुप्ता की सलाह

राधिका गुप्ता का मानना है कि महिलाएं वित्तीय नियंत्रण और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से अपने जीवन में एक नई दिशा दे सकती हैं। उनकी कुछ महत्वपूर्ण सलाहें इस प्रकार हैं:

1. **निवेश में भागीदारी:** महिलाएं केवल बचत पर ध्यान न दें, बल्कि निवेश में भी सक्रिय भागीदारी निभाएं। सही निवेश की योजना बनाना उनकी दीर्घकालिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के लिए महत्वपूर्ण है।
2. **अपने अधिकारों को जानें:** महिलाओं को अपने वित्तीय अधिकारों और संसाधनों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। चाहे वह संपत्ति से जुड़ा हो या वित्तीय सेवाओं से, उन्हें अपने अधिकारों को पहचानकर उनका लाभ उठाना चाहिए।
3. **आर्थिक निर्णयों में साझेदारी:** महिलाओं को अपने जीवन साथी या परिवार के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर आर्थिक फैसलों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। इससे परिवार में आर्थिक निर्णयों की समझ बढ़ेगी और उनका विश्वास भी मजबूत होगा।

निष्कर्ष: संतुलन बनाए रखना जरूरी

रिश्ते और पैसा, दोनों जीवन में महत्वपूर्ण हैं, और दोनों का सही संतुलन बनाए रखना जरूरी है। खासकर महिलाओं के लिए, वित्तीय स्वतंत्रता और सशक्तिकरण उनकी व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में स्थिरता और संतुलन लाता है।

राधिका गुप्ता का कहना है, ''वित्तीय सशक्तिकरण का मतलब केवल पैसे कमाना नहीं है, बल्कि अपने जीवन में महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाना है।''

इसलिए, पैसे को एक साधन समझकर, रिश्तों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते हुए अपने जीवन में आर्थिक संतुलन बनाए रखें।

पुरस्कार

पंजाब नैशनल बैंक को वर्ष 2023–24 हेतु गृह पत्रिका ''पीएनबी प्रतिभा'' हेतु प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार तथा 800 से ज्यादा स्टाफ वाले कार्यालय की श्रेणी में क्षेत्र 'क' में द्वितीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा क्रमशः माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह एवं माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानन्द राय के कर कमलों से ग्रहण किए गए।

भारतीय जीवन बीमा निगम, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को राजभाषा के प्रचार–प्रसार में सराहनीय योगदान हेतु वर्ष 2023–24 का साहित्य, संस्कृति, भाषा और कला को समर्पित राष्ट्रीय संस्था 'वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति, श्रीनगर' द्वारा प्रदत्त पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री जयंत कुमार अरोड़ा, प्रादेशिक प्रबंधन, (मानव संसाधन विकास)।

सौर ऊर्जा क्षेत्र में प्रभुत्व प्राप्त करने हेतु भारत के प्रयास

मुकेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

भारत ने सौर ऊर्जा क्षेत्र में वैश्विक प्रभुत्व प्राप्त करने और अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को नवीकरणीय संसाधनों से पूरा करने के लिए व्यापक रणनीति अपनाई है। ये प्रयास न केवल पर्यावरणीय लाभों को ध्यान में रखते हुए किए गए हैं, बल्कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक वृद्धि, और स्थिरता के लक्ष्यों को भी पूरा करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इस संबंध में निम्नलिखित उपाय किए गए हैं :

1. **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) की स्थापना**– सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की सबसे प्रमुख पहल अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance & ISA) की स्थापना है। यह गठबंधन 2015 में भारत और फ्रांस की साझेदारी में पेरिस में आयोजित जलवायु सम्मेलन (COP21) के दौरान शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य सूर्य के प्रकाश से प्रचुर मात्रा में लाभान्वित होने वाले उष्णकटिबंधीय देशों को एकजुट कर सौर ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देना है। ISA के माध्यम से भारत ने सौर ऊर्जा के लिए वैश्विक प्रयासों में एक नेतृत्वकारी भूमिका निभाई है, जिसके तहत 100 से अधिक देश इसका हिस्सा बन चुके हैं। यह पहल सौर ऊर्जा को वैश्विक स्तर पर सस्ती, सुलभ और टिकाऊ बनाने का लक्ष्य रखती है।

2. **जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन (JNNSM)**– भारत ने सौर ऊर्जा को प्रोत्साहित करने के लिए 2010 में जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन (Jawaharlal Nehru National Solar Mission) की शुरुआत की। इस मिशन का उद्देश्य भारत को सौर ऊर्जा उत्पादन के मामले में अग्रणी बनाना और 2022 तक 100 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित करना था। इस मिशन के तहत, सौर ऊर्जा उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई और यह लक्ष्य भारत के ऊर्जा मिश्रण में सौर ऊर्जा के हिस्से को बढ़ाने में महत्वपूर्ण साबित हुआ। हालांकि, सौर ऊर्जा की बढ़ती मांग और भारत के बढ़ते ऊर्जा उपभोग के साथ, यह लक्ष्य अब 2030 तक बढ़ाकर 280 गीगावाट कर दिया गया है। JNNSM के तहत, सौर ऊर्जा के कई बड़े और छोटे उत्पादन केंद्रों की स्थापना की गई है, जो देश के विभिन्न हिस्सों में सौर ऊर्जा की उपलब्धता को बढ़ाने में सहायक रहे हैं।

3. **बड़े सौर पार्कों की स्थापना**– भारत ने अपनी विशाल भू–भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर कई बड़े सौर पार्कों की स्थापना की है। इनमें सबसे प्रमुख भादला सोलर पार्क (राजस्थान) है, जो दुनिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा पार्क है और लगभग 2.25 गीगावाट की ऊर्जा उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। इसके अलावा, गुजरात का चरणका सोलर पार्क, मध्य प्रदेश का रीवा सोलर पार्क, और कर्नाटक का पवगड़ा सोलर पार्क भी बड़े सौर ऊर्जा उत्पादक केंद्रों में से हैं। ये सौर पार्क न केवल सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा का स्रोत हैं, बल्कि उन्होंने भारत को एक सौर ऊर्जा महाशक्ति के रूप में उभरने में मदद की है। इसके साथ ही, सौर पार्कों के विकास ने ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किए हैं।

4. **रूफटॉप सोलर कार्यक्रम**– भारत ने रूफटॉप सोलर पावर को भी एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में अपनाया है। इस योजना के तहत नागरिकों और व्यवसायों को अपने घरों और कार्यालयों की छतों पर सोलर पैनल लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इसके लिए सरकार ने वित्तीय सब्सिडी, सस्ता ऋण, और अन्य लाभ प्रदान किए हैं, जिससे लोग आसानी से सौर ऊर्जा का उपयोग कर सकें। रूफटॉप सोलर योजना

का उद्देश्य न केवल सौर ऊर्जा उत्पादन को विकेंद्रित करना है, बल्कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति की निर्भरता को कम करना और ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना भी है। यह योजना बड़े शहरों में सफल रही है और इसका विस्तार छोटे कस्बों और गांवों तक किया जा रहा है।

5. **नीतिगत सुधार और प्रोत्साहन**– भारत सरकार ने सौर ऊर्जा क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कई नीतिगत सुधार किए हैं। इनमें टैरिफ सब्सिडी, उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन, और आयात शुल्क में रियायतें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, स्वच्छ ऊर्जा के लिए सस्ती पूंजी उपलब्ध कराने के प्रयास किए गए हैं, ताकि निवेशकों को सौर ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश करने के लिए प्रेरित किया जा सके। भारत ने कई राज्यों में सौर ऊर्जा की खरीद और आपूर्ति के लिए दीर्घकालिक अनुबंधों (Power Purchase Agreements) को प्रोत्साहित किया है। इससे निजी क्षेत्र की भागीदारी भी बढ़ी है, जिससे सौर ऊर्जा उत्पादन की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

6. **स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में अग्रसर**– भारत ने 2015 में पेरिस समझौते के तहत जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की थी। इसके तहत, भारत ने 2030 तक 50% बिजली की जरूरतें नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से पूरा करने का लक्ष्य रखा है, जिसमें सौर ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका है। सौर ऊर्जा से बिजली उत्पादन न केवल भारत के कार्बन उत्सर्जन को कम करेगा, बल्कि इससे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों (जैसे कोयला) पर निर्भरता भी घटेगी।

7. **घरेलू उत्पादन और आत्मनिर्भरता**– भारत ने 'मेक इन इंडिया' और आत्मनिर्भर भारत' पहल के तहत सौर उपकरणों के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा दिया है। सौर पैनल, इनवर्टर, और अन्य सौर उपकरणों का उत्पादन अब देश में बड़े पैमाने पर हो रहा है, जिससे आयात पर निर्भरता कम हो रही है और रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

   सरकार ने घरेलू सौर उपकरण उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए विनिर्माण सब्सिडी, शुल्क छूट, और अन्य वित्तीय सहायता प्रदान की है। इसका उद्देश्य सौर ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना और एक मजबूत घरेलू आपूर्ति श्रृंखला विकसित करना है।

8. **वित्तीय सहायता और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग**– भारत को विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। इसके साथ ही भारत विभिन्न देशों के साथ द्विपक्षीय समझौतों के तहत सौर ऊर्जा के क्षेत्र में तकनीकी और वित्तीय सहयोग कर रहा है। यह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भारत की सौर ऊर्जा परियोजनाओं को मजबूत बनाने में सहायक रहा है।

9. **सौर ऊर्जा की लागत में कमी**– भारत ने सौर ऊर्जा को सस्ती और सुलभ बनाने के लिए कई प्रयास किए हैं। प्रतिस्पर्धी नीलामी प्रक्रियाओं और प्रोत्साहनों के माध्यम से भारत ने सौर ऊर्जा की कीमतों को तेजी से कम किया है। इससे सौर ऊर्जा अब देश के सबसे सस्ते और स्थायी ऊर्जा स्रोतों में से एक बन गई है।

निष्कर्ष– भारत ने सौर ऊर्जा क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाई है। इन प्रयासों का उद्देश्य न केवल ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास को सुनिश्चित करना है, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने और वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य में नेतृत्वकारी भूमिका निभाना भी है। आने वाले समय में, भारत सौर ऊर्जा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी बन सकता है, जिससे वैश्विक स्तर पर स्वच्छ और हरित ऊर्जा क्रांति को बढ़ावा मिलेगा।

सफल और असफल लोग अपनी क्षमताओं में बहुत भिन्न नहीं होते हैं। वे अपनी क्षमता तक पहुँचने के लिए अपनी इच्छाओं में भिन्न होते हैं।
–जॉन मैक्सवेल

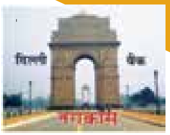

बढ़ता है आत्मविश्वास तो बढ़ जाती हैं क्षमताएं

सुश्री सोनाली राणा
उप प्रबंधक
भारतीय निर्यात– आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक),
नई दिल्ली कार्यालय

सपने, इच्छाएं और आकांक्षाएं। ये तीनों चीज़ें हर इंसान की आंखों में दिखाई देती हैं। इसके बावजूद, बहुत कम लोग होते हैं, जो अपने सपनों की मंज़िल तक पहुंच पाते हैं। मेरा मानना है कि इसका एक कारण है, हमारे मन में जड़ें जमा लेने वाला नकारात्मक विचार। विचार क्या, यह विश्वास बन जाता है कि हम सफल हो ही नहीं सकते। जबकि हकीकत ये है कि "खुद पर विश्वास न करना" हमारी मंज़िल और हमारे सपनों के बीच की सबसे बड़ी बाधा है। 'आत्मविश्वास' अपने सपनों को हासिल करने की दिशा में पहला कदम है। यह आपको जीवन में आने वाली किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए सशक्त बनाता है। आत्मविश्वास का सार सरल और गहरा है; इसका मतलब है खुद पर और अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखना। अपनी क्षमताओं में अडिग विश्वास हमारे अप्रयुक्त सामर्थ्य को उजागर करने में मदद करता है। इस विश्वास के बिना, असफलता का डर हमारे प्रयासों में अवरोध पैदा करता है और हमारी क्षमताओं को सीमित कर देता है। नकारात्मक प्रतिक्रिया, आलोचना, और असफलताएं हमें कमजोर कर देती हैं, जिससे हमें अपनी योग्यताओं पर संदेह होने लगता है। इस आत्म–संदेह का सामना करना और अपनी भीतर की ताकत को पहचानना अत्यंत आवश्यक है। जब हम अपने आत्म–संदेह को चुनौती देंगे, तभी हम अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने में सक्षम होंगे।

अपने विचारों को सकारात्मक दिशा में मोड़ने पर हमारी जो सकारात्मक सोच बनेगी, वो हमें नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी तो यही कहते हैं–

''मनुष्य अक्सर वही बनता है जो वह अपने बारे में सोचता है। यदि मैं बार–बार कहता हूं कि मैं एक निश्चित काम नहीं कर सकता, तो संभव है कि मैं वास्तव में उसे करने में असमर्थ हो जाऊं। इसके विपरीत, यदि मुझे विश्वास है कि मैं इसे कर सकता हूं, तो मैं निश्चित रूप से इसे करने की क्षमता हासिल कर लूँगा, भले ही मुझमें शुरुआत में वह क्षमता न हो।''

इसके अलावा, आत्मविश्वास हमें मजबूत और सहनशील बनाने में भी मदद करता है। हमें अपनी क्षमताओं पर विश्वास हो, तो बाधाएं भी अवसर हो जाती हैं। इससे हमारी सकारात्मक मानसिकता दृढ़ बनती है, और हममें विपरीत परिस्थितियों में अनुकूलन और नए विचारों को अपनाने की क्षमता विकसित होती है।

आत्मविश्वास हमें अपनी आरामगाह से बाहर निकलने और जोखिम उठाने के लिए प्रेरित करता है। हर बड़ी उपलब्धि एक विश्वास के साथ हासिल होती है। यह मानना जरूरी है कि आप इसे कर सकते हैं। आखिरकार, जो विचार वास्तव में मायने रखता है, वह हमारा खुद का है। इसका एक शानदार उदाहरण हैं, ओप्रा विनफ्रे। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा था,

''मैं हमेशा जानती थी कि मैं 32 वर्ष की उम्र तक एक करोड़पति बन जाऊंगी। दरअसल, मैं अफ्रीका की सबसे अमीर महिला बनने जा रही हूँ।''

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि उन्होंने वास्तव में यही किया? इतिहास में ऐसे कई लोग हैं, जैसे विंस्टन चर्चिल, जिन्होंने खुद पर विश्वास किया, भले ही दूसरों ने नहीं किया, और अंततः सफलता के शिखर तक पहुंचने में कामयाब हुए।

अब, मैं आत्मविश्वास के महत्त्व को स्पष्ट करने के लिए एक व्यक्तिगत अनुभव साझा करना चाहती हूँ। हाल ही में, मैंने 21 किलोमीटर की मैराथन में भाग लिया। शुरू में, मुझे अपने प्रदर्शन को लेकर काफी संदेह था। मैंने कई बार सोचा कि क्या मैं इसे सफलतापूर्वक पूरा कर पाऊंगी और क्या मैं अपनी अपेक्षाओं पर खरी उतर पाऊंगी। लेकिन मैंने अपने मन में ठान लिया कि मैं इसे पूरा करूंगी, चाहे जो हो। जब दौड़ का दिन आया, तो उसी सकारात्मकता के साथ मैंने अपने प्रशिक्षण पर विश्वास रखा। दौड़ के दौरान, हर किलोमीटर के साथ मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया। और अंततः, मैंने 2 घंटे 36 मिनट में रेस पूरी की। ये मेरे लिए एक उपलब्धि

है, जिसे मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं कर पाऊंगी। इस दिन मैंने ये अनुभव किया कि हमारा विश्वास हमारी क्षमताओं को बहुत हद तक निर्धारित करता है। जब हम अपने आप पर विश्वास करते हैं, तो हम न केवल अपने लक्ष्यों को हासिल कर सकते हैं, बल्कि अपनी वास्तविक क्षमता से कहीं अधिक ऊंचाइयां हासिल कर सकते हैं।

आत्मविश्वास को विकसित करना एक निरंतर प्रक्रिया है, जो हमारी मानसिकता और आदतों पर निर्भर करती है। आत्मविश्वास का निर्माण तब होता है, जब हम अपनी क्षमताओं को सही से पहचानते हैं और उन्हें निखारने के लिए कदम उठाते हैं। नकारात्मक विचारों को चुनौती देना और सकारात्मक सोच को अपनाना भी इस प्रक्रिया का अहम हिस्सा है। सफलता और असफलता दोनों से सीखना महत्त्वपूर्ण है; असफलताएं हार नहीं आत्म–विकास के अवसर होते हैं। धीरे–धीरे आग बढ़ें, पहले छोटे लक्ष्य तय करें और उन्हें हासिल करें, क्योंकि हर छोटी सफलता हमारे आत्मविश्वास को मजबूत करती है। इस प्रकार, आत्मविश्वास केवल एक मानसिकता नहीं, बल्कि एक आदत है जिसे निरंतर अभ्यास और खुद पर विश्वास करके विकसित किया जा सकता है।

अंत में यही कहूंगी कि आत्मविश्वास विकास की कोई मंज़िल नहीं है, यह तो एक यात्रा है। यह लगातार सकारात्मक विचारों से विकसित होता है। जब हम खुद पर विश्वास करेंगे और हमारे सपनों के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे तब कोई भी मंज़िल हमारे लिए दूर नहीं रहेगी।

स्त्री : अब तुम मधुसूदन बनो

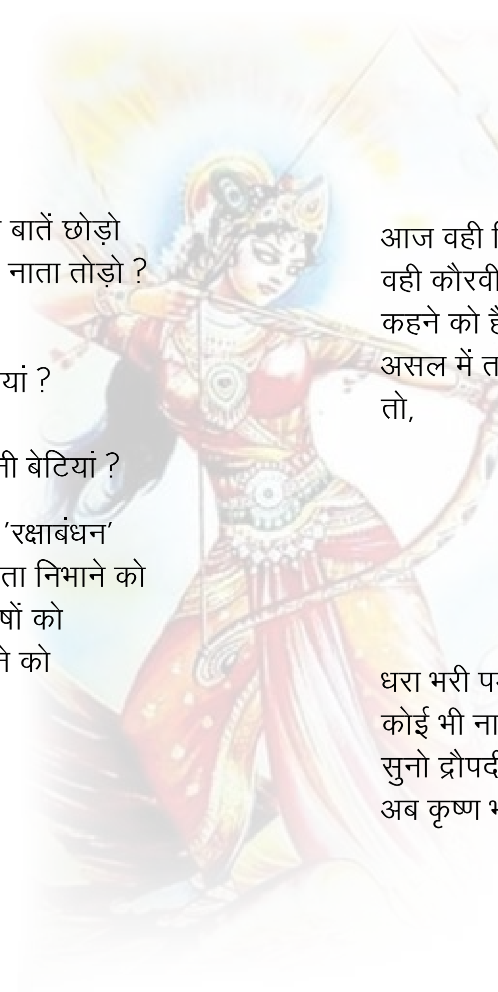

क्या संगीनों के साए में
निकलेंगी अपनी बेटियां
अपनी ही गली के हिस्सों में
क्या सिमटेंगी अपनी बेटियां

चांद पर जाने की बातें छोड़ो
दफ़्तर से भी क्या नाता तोड़ो ?

देहरादून से कलकत्ता तक
यूंही सताई जायेगी अपनी बेटियां ?
घर से निकली बाहर को
क्या वापस घर आ पायेगी अपनी बेटियां ?

क्यों मना रहे हम 'रक्षाबंधन'
सिर्फ औपचारिकता निभाने को
जब हम खुद पुरुषों को
मुंह नहीं है छिपाने को

क्यों नहीं हम अपने ही घरों में
बेटों से ये बर्ताव करें
वो ये जानें और समझें
थू है ऐसी मर्दानगी पर
जो बेबस पर घाव करे

पुरुषत्व दिखाया माधव ने
जब सब नपुंसक हो बैठे
चहुं ओर सिर्फ स्याह अंधेरा
आज बृजभूषण सब हो बैठे

आज वही दिन फिर से है
वही कौरवी दरबार है
कहने को है प्रजातंत्र
असल में तालिबानी सरकार है
तो,

स्त्री तुम खुद ही मधुसूदन बन जाओ
दुष्टों का संहार करो
छोड़ो दुपट्टा शस्त्र उठा लो
खुद ही अपना अस्तित्व बचा लो

धरा भरी पड़ी शकुनिओं से
कोई भी ना आगे आएंगे
सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो
अब कृष्ण भी ना कुछ कर पाएंगे।

ओ.पी. वीरेंद्र सिंह
बैंक ऑफ बड़ौदा

पीएनबी ने किया ''डिजिटल बैंकिंग'' पर अखिल भारतीय अंतर बैंक सेमिनार एवं अखिल भारतीय नराकास अध्यक्ष वार्षिक सम्मेलन का आयोजन

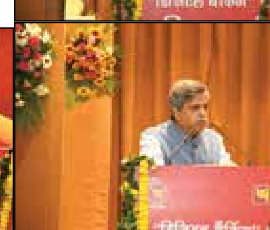

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा गुरूग्राम, में अखिल भारतीय अंतर बैंक सेमिनार एवं बैंक के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों के वार्षिक सम्मेलन का आयोजन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल की अध्यक्षता में किया गया जिसमें दिल्ली बैंक नराकास के सभी उच्च अधिकारियों व सदस्यों ने भाग लिया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से सचिव महोदया **आदरणीय सुश्री अंशुली आर्या, आई. ए. एस. की गरिमामयी उपस्थिति रही।** कार्यक्रम में जगजीत कुमार, निदेशक (राजभाषा) वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–श्री धर्मबीर, उप निदेशक (राजभाषा) वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय एवं दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्ष श्री समीर बाजपेयी व अन्य उच्चाधिकारीगण उपस्थित रहे। इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि महोदया तथा बैंक के शीर्ष कार्यपालकों द्वारा पंजाब नैशनल बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तिका **"पीएनबी प्रवाह"** का विमोचन किया गया।

श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी देश की राजभाषा है और इसके प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु पंजाब नैशनल बैंक दृढ़ संकल्पित है। पंजाब नैशनल बैंक के संयोजन में देश भर में 28 नराकास कार्यरत हैं, जिनका संयोजन कुशलतापूर्वक पंजाब नैशनल बैंक द्वारा किया जा रहा है। पंजाब नैशनल बैंक अपने डिजिटल उत्पादों में हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग से कारोबार बढ़ा रहा है और राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सदैव प्रतिबद्ध है।

मुख्य अतिथि महोदया ने अपने संबोधन में पंजाब नैशनल बैंक के राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की और कहा कि बैंक राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। पंजाब नैशनल बैंक ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में दूसरों के लिए भी आदर्श स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि हम सभी मूल रूप से सरल हिंदी में काम करें और राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करें।

उक्त कार्यक्रम में बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं तथा सर्वश्रेष्ठ नराकास अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को मुख्य अतिथि महोदया, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय एवं कार्यपालक निदेशक महोदय के करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

जगदलपुर, छत्तीसगढ़ की यात्रा

> "एक जंगल है तेरी आंखों में,
> मैं जहां राह भूल जाता हूँ..."
> –दुष्यंत कुमार

अभिनव उपाध्याय
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

जिस तरह कुछ लोगों को पहाड़ अच्छे लगते हैं, किसी को पानी, किसी को महानगरों की जैविक जीवनशैली; उसी तरह मुझे जंगल अच्छे लगते हैं। जंगलों में मिलने वाली शांति, एकांत और प्रकृति से निकटता मुझे हमेशा जंगलों की ओर खींच लाती है।

बैंक में काम करते–करते आप कृत्रिम जीवन से अक्सर ऊब जाते हो और सुकून की तलाश करते हो। मेरे साथ भी यही हुआ। मेरे एक मित्र जो जगदलपुर में पदस्थ हैं, उनसे मैंने उस जगह के बारे में काफी सुना हुआ था। अक्सर, समाचार में भी वहां की ख़बरें मिलती थीं जो कि ज़्यादातर अप्रिय ही होती थीं। नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण इस स्थान के प्रति मन में एक अजब सा कौतुहल भी बना रहता था। हालांकि, जंगल का आकर्षण और मित्र के आमंत्रण को मैं अनदेखा नहीं कर सका। अंततः, एक सप्ताहांत में मैंने जगदलपुर जाने की योजना बनायी। जगदलपुर, बस्तर जिले का मुख्यालय है जो कि छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण में स्थित है। राजधानी रायपुर से यह सड़क मार्ग द्वारा लगभग 300 किलोमीटर दूर है। यहां पहुंचने के लिये स्लीपर कोच तथा साधारण बसें आसानी से उपलब्ध हैं जो कि तकरीबन 6 से 7 घंटे में पहुंचाती हैं। रेल मार्ग द्वारा भी यहां पहुंचा जा सकता है; परंतु रेलगाड़ी की आवृत्ति बहुत कम है और 10 घंटे से अधिक का समय भी लग जाता है।

चूंकि जगदलपुर में विभिन्न स्थानों में घूमना था अतः मैंने और रायपुर से मेरे दो साथियों ने टैक्सी से जाना उचित समझा। टैक्सी का ड्राइवर अनुभवी और समझदार था जिसने लगभग 5 घंटे में जगदलपुर पहुंचा दिया। रास्ता अच्छा था; परंतु मन में थोड़ा भय ज़रूर था। ड्राइवर ने भी हमें नक्सलियों से संबंधित कहानियां सुनाई और यह भी बताया कि नक्सलियों ने आज तक कभी किसी पर्यटक पर कोई हमला नहीं किया है और न ही कोई हानि पहुंचाई है।

सबसे पहले जगदलपुर शहर के बारे में आप को बता दूँ।

यह शहर जैसा सोचा था उसके बिलकुल विपरीत निकला। हमें लगा था कि मैला कुचैला सा, पिछड़ा सा क़स्बा होगा। पर यहां की ऊंची–ऊंची इमारतें देख कर हमारा भ्रम टूट गया। मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, प्रसार भारती केंद्र, कृषि महाविद्यालय, अच्छे और बड़े बाज़ार, शो रूम और तमाम गाड़ियां। इसके बावजूद भी अत्यंत साफ़ हवा। यह शहर किसी भी औसत शहर को मात दे सकता है। एक और बात जो गौर करी वो ये कि पुलिस हमेशा सादे कपड़ों में दिखी और नियमित अंतराल पर सेना के हेलिकॉप्टर जाते दिखे।

मित्र के घर रात भर विश्राम किया और अगले दिन हम सब सुबह–सुबह तीरथगढ़ जलप्रपात और कुटुमसर की गुफाएं देखने निकले। इस क्षेत्र में हर थोड़ी दूर पर हमारे बैंक की शाखा मिल जाएगी जो कि एक सुखद अपनेपन का एहसास देती है।

तीरथगढ़ जगदलपुर से लगभग 30 किमी की दूरी पर है। यहां, गुफाओं में जाने के लिए छत्तीसगढ़ पर्यटन से टिकट लेना पड़ता है। पहले हम गुफा की तरफ बढ़े।

सुनसान जंगल के अंदर हम अपनी कार में बढ़े जा रहे थे। हमको कहा गया था कि बीच में एक गाइड मिलेगा उसके साथ आगे जाना है। जंगल के सन्नाटे में एक अजीब तरह का भय व्याप्त था। जैसे तैसे हम अपने को हिम्मत देते हुए आगे बढ़े। वहां थोड़ी दूर पर एक गाइड मिला जो कि एक एलईडी लाइट पकड़े हुए था। गुफा के पास पहुंच कर देखा

तो वहां छोटे–छोटे जंगली बेरी के ढेर लिए ग्रामीणों ने हाट लगायी हुई थी। गाइड कुछ बात नहीं कर रहा था, हमको लगा कि उसका काम केवल रास्ता दिखाना है। यह भी समझ आया कि भाषा के अंतर के कारण वो कुछ बोलने में थोड़ा हिचकिचा रहा है।

गुफा के बारे में हमारे मन में यही इमेज थी जैसी फिल्मों में दिखाते हैं। हमको वही लगा कि होगी छोटी–मोटी कोई गुफा।

वहाँ गुफा के मुहाने पर नीचे जाती सीढ़ियां थीं। सीढ़ियों से नीचे उतरे तो एक छोटा सा छेद जैसा एंट्रेंस था जिसमें घुटनों के बल या नीचे बैठ के घुसना था। मुझे बड़ा अजीब लगा कि ये कैसी गुफा है भाई! हिम्मत करके अंदर घुसे तो पाया कि यहां एक और सीढ़ी है और ये तो और नीचे जा रही है। जैसे तैसे नीचे उतरे तो पाया कि घुप्प अँधेरा है और नमी है। टॉर्च की लाइट में ऊपर देखा तो ऐसा लगा कि किसी विशाल गुम्बदनुमा कमरे में हैं। अब हमको आगे चलने को कहा गया। ऊबड़–खाबड़ रास्ता, जगह जगह कीचड़ और पानी, नीचे कुछ दिखाई भी ना दे। फिर हमने अपने मोबाइल फ़ोन का टॉर्च जला लिया और जैसे तैसे खुद को पत्थरों पर गिरने से बचाते हुए चलने लगे। छुट्टी का दिन होने के कारण अंदर काफी भीड़ थी। गाइड ने बताया कि हम सतह से 300 मीटर नीचे हैं। डर ये भी लगे कि कहीं भूकंप आ गया तो क्या होगा!

ऑक्सीजन की कमी और नमी होने के कारण हमारी साँसें फूलने लगीं और हम पसीने से लथपथ होने लगे। गाइड ने बताया कि करोड़ों साल पहले इस गुफा में पानी भरा हुआ था। छत पर और अन्य सतहों पर चूना पत्थर की अनेक प्राकृतिक आकृतियां बनी हुई थीं; जिसमें शिवलिंग की आकृतियां भी थीं। सबसे अंत में हम एक स्थान पर रुके जहां एक बहुत बड़े शिवलिंग पर पूजा पाठ चल रहा था। उसके आगे गुफा में जाने की अनुमति नहीं थी।

अब जिस रास्ते से गए थे, उसी से वापस आना था। आख़िरकार बाहर आए और जान में जान आयी। फिर हम बढ़ चले तीरथगढ़ जलप्रपात की तरफ। वहां पर जाने में कोई कठिनाई नहीं हुई अपितु वहां पर काफी बड़ा बाज़ार लगा हुआ था जहां खाने–पीने की तमाम चीज़ें उपलब्ध थीं।

कम से कम 200 सीढ़ियां नीचे उतरने के बाद हमें इस अत्यंत सुंदर झरने के दर्शन हुए। प्रवाह बहुत तेज़ नहीं था तो हमने वहाँ स्नान करने का विचार बनाया। झरने के गिरते हुए पानी में आधे घंटे तक आनंदपूर्वक स्नान किया और सारे शरीर की थकावट दूर हो गयी। अब अगली चुनौती थी वापस सीढ़ियां चढ़ना। जैसे–तैसे ऊपर चढ़े और फिर लौटते समय एक ग्रामीण हाट में रुक कर मुर्गे की लड़ाई देखी।

अगले दिन चित्रकोट जलप्रपात देखने गये। इसे छतीसगढ़ का नियाग्रा फाल्स भी कहा जाता है। यह जगदलपुर से करीब 40 किमी दूर स्थित है। उस दिन शिवरात्रि होने के कारण वहाँ भारी भीड़ थी और मेला लगा हुआ था। करीब एक किमी दूर हमारी गाड़ी रुकवा दी गयी और प्रपात तक हम पैदल ही गए। वहां करीब जाकर पता चला कि इसे नियाग्रा क्यों बोला जाता है। चित्रकोट अत्यंत विशाल और मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य है।

हम लोग प्रपात के ऊपर खड़े हुए थे। नीचे देखा तो पाया कि नौका विहार भी हो रहा है। उत्साह में हम भी नीचे चल पड़े। वहां भी सीढ़ियों ने हमारी परीक्षा ली। नीचे पहुंच कर नाव में बैठे। नाव वाला, प्रपात के एकदम नीचे से नाव ले कर गया। छोटी सी नाव और उथल पुथल भरा पानी। एक बार फिर हमारी जान गले तक आ गयी। हमने देखा कि झरने के नीचे इंद्रधनुष बना हुआ है और हम ठीक उसके बीच से निकल रहे थे ऐसा अनुभव जीवन में कभी कभार ही मिलता है। वापस किनारे पर पहुँच कर हमने इस प्रकृति के सुंदर रूप को थोड़ी देर और निहारा और फिर अपने गंतव्य को रवाना हो गए।

पर्यटन में ऐसा अनुभव बहुत कम आता है जब डर और थ्रिल के कारण आपकी धड़कनें तेज़ हो जाती हैं। जगदलपुर एक ऐसा ही रोमांचक अनुभव प्रदान करता है। अब मुझे एहसास हुआ कि हिमालय पर पर्वतारोहण करने वाले कैसा महसूस करते होंगे। जगदलपुर से वापस आकर एक अलग ही प्रकार की शांति एवं आत्मिक संतुष्टि का अनुभव हुआ। मैं इस यात्रा और अनुभव को जीवन पर्यन्त याद रखूँगा और जब भी मौका मिलेगा, वापस ज़रूर जाऊंगा, क्योंकि यूं ही नहीं कहा जाता कि "डर के आगे जीत है!"

भारतीय रिज़र्व बैंक की राजभाषा गतिविधियाँ

हिंदी में परिचर्चा (डिबेट) प्रतियोगिता

आरबीआई/90 के अवसर पर नई दिल्ली कार्यालय द्वारा 'भविष्य की बैंकिंग के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)– वरदान या अभिशाप' विषय पर एक परिचर्चा (डिबेट) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नई दिल्ली, चंडीगढ़, कानपुर, लखनऊ, शिमला, जम्मू, देहरादून और जयपुर कार्यालयों के कुल 15 स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की। उक्त कार्यक्रम का उद्‌घाटन क्षेत्रीय निदेशक महोदय श्री रोहित पी.दास द्वारा किया गया।

नई दिल्ली कार्यालय के क्षेत्रीय निदेशक सहित कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण, कार्यालय के स्टाफ–सदस्य तथा प्रतियोगिता के सहभागीगण

संबोधित करते हुए क्षेत्रीय निदेशक महोदय श्री रोहित पी.दास

हिन्दी पखवाड़ा तथा हिंदी दिवस समारोह

हिन्दी दिवस 2024 के अवसर पर भारतीय रिज़र्व बैंक क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली में 14 सितंबर से 29 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान हिन्दी **'आशुभाषण'** प्रतियोगिता (चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए), **'हिंदी टिप्पण और प्रारूप लेखन'** प्रतियोगिता, वरिष्ठ अधिकारियों के लिए **'कविता वाचन प्रतियोगिता** (राष्ट्रकवि स्वर्गीय रामधारी सिंह दिनकर की सुप्रसिद्ध काव्य रचना रश्मिरथी के पाठ्यांश का वाचन), **वित्तीय साक्षरता केन्द्रित नुक्कड़ नाटक पटकथा लेखन (Script Writing) प्रतियोगिता** तथा **'कविता आवृति'** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के सभी स्टाफ–सदस्यों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

हिन्दी दिवस का मुख्य समारोह 25 सितंबर 2024 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका **'मेधा'** के 30वें अंक का विमोचन मुख्य महाप्रबंधक, श्री चंदन कुमार तथा मंचासीन वरिष्ठ अधिकारियों के कर–कमलों से किया गया। इस अवसर पर एक सुमधुर सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया।

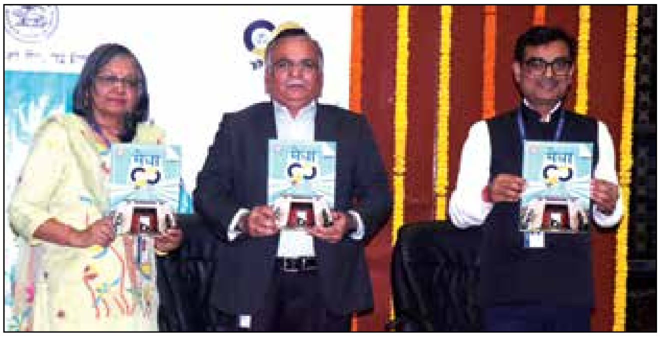

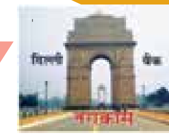

भारतीय रिज़र्व बैंक की राजभाषा गतिविधियाँ

हिन्दी कार्यशाला

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. विजय कुमार मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, हंसराज कॉलेज, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य महाप्रबंधक (नामित) श्री चन्दन कुमार द्वारा किया गया।

कार्यशाला में उपस्थित सभी सहभागियों को हिन्दी में बैंकिंग विषयक पुस्तकें दी गई।

मुख्य महाप्रबंधक महोदय सभी सहभागियों को संबोधित करते हुए

व्याख्यान

व्याख्यान देते हुए मुख्य अतिथि श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच

भारतीय रिजर्व बैंक नई दिल्ली कार्यालय द्वारा आरबीआई/90 के अवसर पर कार्यालय के स्टाफ–सदस्यों के ज्ञानवर्धन हेतु को **"हिंदी के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका – वर्तमान एवं भविष्य का परिदृश्य"** विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान देने के लिए अतिथि वक्ता के रूप में **श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच, निदेशक– भारतीय भाषाएँ और सुगम्यता, माइक्रोसॉफ्ट** को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक (नामित) श्री चन्दन कुमार द्वारा की गई।

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक की राजभाषा गतिविधियाँ

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक द्वारा हिंदी पखवाड़े के आयोजन दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी कार्यशाला तथा हिंदी कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। दिनांक 30 सितंबर, 2024 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

आईपीपीबी द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला

आईपीपीबी द्वारा हिन्दी कवि सम्मेलन

आईपीपीबी द्वारा पुरस्कार वितरण

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60वीं छमाही समीक्षा बैठक

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 60वीं छमाही समीक्षा बैठक, मुख्य अतिथि, माननीय संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, **डॉ. मीनाक्षी जौली** तथा मार्गदर्शक, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, **श्री के. पी. शर्मा**, की गरिमामयी उपस्थिति एवं **श्री राजीव जैन**, कार्यकारी अध्यक्ष– दिल्ली बैंक नराकास महाप्रबंधक (दिल्ली अंचल),

पंजाब नैशनल बैंक की अध्यक्षता में दिनांक 16 जुलाई, 2024 को पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय, द्वारका में नराकास के सभी 49 सदस्य कार्यालयों के स्थानीय कार्यालयाध्यक्षों की गौरवमयी उपस्थिति के साथ–साथ दिल्ली बैंक नराकास के राजभाषा प्रभारियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

बैठक के आरंभ में **श्रीमती मनीषा** शर्मा, सदस्य– सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक ने माननीय मुख्य अतिथि डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, विशिष्ट अतिथि श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (का.), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, अध्यक्ष दिल्ली (बैंक) नराकास, गणमान्य अतिथियों एवं बैठक में उपस्थित समस्त अधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने अतिथियों को अवगत कराया कि दिल्ली बैंक नराकास की प्रत्येक बैठक में सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख स्वयं भाग लेते हैं जिससे सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु अनुकूल वातावरण तैयार होता है। उन्होंने

सभी कार्यालय प्रमुखों से राजभाषा सरिता का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर बनाए रखने का आग्रह किया। उन्होंने मुख्य अतिथि, माननीय संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, डॉ. मीनाक्षी जौली का दिल्ली बैंक नराकास की बैठक में गरिमामयी उपस्थिति के लिए विशेष आभार व्यक्त किया और आश्वस्त किया कि नराकास उनके निर्देशों और मार्गदर्शन को आत्मसात करते हुए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की अपेक्षाओं पर पूरी तरह से खरा उतरेगी। उन्होंने उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग श्री के. पी. शर्मा का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी उनके सहयोग और मार्गदर्शन की अपेक्षा व्यक्त की।

श्री राजीव जैन ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुख्य अतिथि, माननीय संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, डॉ. मीनाक्षी जौली का उनके व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकाल कर दिल्ली बैंक नराकास की बैठक की गरिमा बढ़ाने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र – श्री कुमार पाल शर्मा का उनके निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

अध्यक्ष महोदय ने सभी उपस्थितों का अभिनन्दन किया तथा सभी कार्यालय अध्यक्षों से हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का आह्वान किया अध्यक्ष महोदय ने मंच को अवगत कराया कि

दिल्ली बैंक नराकास की गतिविधियां वर्षभर निर्बाध रूप से चलती रहती हैं। न केवल छमाही बैठकों का समयबद्ध आयोजन किया जाता है, अपितु दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका **"बैंक भारती"** का भी ससमय प्रकाशन सुनिश्चित किया जाता है और नराकास द्वारा वर्ष पर्यन्त संगोष्ठियां, सेमीनार, कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। उन्होंने उपस्थित कार्यालय प्रमुखों और राजभाषा प्रभारियों की ओर से विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि हम सब मिलकर न केवल राजभाषा कार्यान्वयन के सभी लक्ष्य प्राप्त करेंगे अपितु उत्कृष्टता के नए आयाम भी स्थापित करेंगे।

उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय **श्री के. पी. शर्मा,** ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयोग, प्रकाशन, प्रशिक्षण और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है और दिल्ली बैंक नराकास द्वारा इन चारों 'प्र' का प्रयोग निरंतर किया जा रहा है। उन्होंने नए डिजिटल उत्पादों और पोर्टल में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की आवश्यकता पर बल दिया ताकि राजभाषा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य अतिथि, माननीय संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, **डॉ. मीनाक्षी जौली** ने दिल्ली बैंक नराकास के कार्यों और उपलब्धियों को सराहते हुए आह्वान किया कि नराकास को नई पहल करते हुए सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा किए गए नवोन्मेषी कार्यों को किसी पोर्टल पर साझा करना चाहिए जिससे अन्य कार्यालय भी प्रेरित व लाभान्वित हो सकें। उन्होंने दिनांक 14–15 सितंबर, 2024 को दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित किए जा रहे अखिल भारतीय हिंदी दिवस समारोह में बढ़–चढ़ कर सहयोग देने और भाग लेने का भी आह्वान किया।

तदोपरांत **श्री आशीष शर्मा,** मुख्य प्रबन्धक, राजभाषा विभाग, पीएनबी ने दिल्ली बैंक नराकास की उपलब्धियों और नवोन्मेषी कार्यों को पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत किया।

मंचासीन अधिकारियों द्वारा इस अवसर पर दिल्ली बैंक नराकास की गृह पत्रिका **बैंक भारती** के 31वें अंक का तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उत्तर दिल्ली द्वारा प्रकाशित पत्रिका **यूनियन इंद्रप्रस्थ** व यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण दिल्ली द्वारा प्रकाशित पत्रिका **यूनियन नेतृत्व** का विमोचन किया।

द्वितीय सत्र में आयोजित संगोष्ठी में डॉ. धनेष द्विवेदी, सम्पादक **'राजभाषा भारती'** द्वारा **''राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न आयाम''** विषय पर व्याख्यान दिया।

अंतिम सत्र में आयोजित कवि सम्मेलन में विख्यात कवयित्री डॉ. सविता चड्ढा तथा कवि डॉ. ओम प्रकाश **'निश्चल'** के काव्यपाठ ने श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया।

तदोपरांत मंचासीन सभी विशिष्टजनों ने दिल्ली बैंक नराकास द्वारा सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 03 मई, 2024 को आयोजित की गई हिंदी प्रतियोगिता **"कुछ भूल गए, कुछ याद रहा"** के विजेताओं को प्रमाण–पत्र प्रदान किए।

अंतर्मन और जीवन

समझते संभलते, संभलते समझते एक अरसा बीत गया।
कैसी थी जिंदगी, कैसी थी करनी,
किधर जा रहे थे, कहाँ था जाना,
यहाँ झाँक कर, वहाँ मुड़ गया,
चल चल रुका, रुक रुक चला।
उलझते निकलते, निकलते उलझते,
एक अरसा बीत गया।
क्या हाथ आया, क्या रह गया,
क्या रोक पाया, क्या बह गया,
क्या था सही, क्या गलत हुआ,
कौन हमसे छूटा, कौन छोड़ चला।
फिसलते संभलते, संभलते फिसलते,
एक अरसा बीत गया।
बहुतों की सुनी, बहुतों ने सुनी,
सुनकर किया, करके सुना,
यहाँ जागते, वहाँ भागते,
कुछ छोड़ी कुछ पकड़ी, नई आदतें।
मिलते बिछड़ते, बिछड़ते मिलते
कोई मीत हुआ, कोई मीत गया।
कितने शहर बदले, कितने ठहर बदले,
ये वक्त है कि हर पहर बदले
सोचा कि रुक कर समझूं जरा,
ठहरा तो पाया सन्नाटा ।
समझते संभलते, संभलते समझते,
एक अरसा बीत गया,
सन्नाटों के शोर सुनाकर
मेरा वक्त हर बार मुझसे जीत गया।

सौरभ तिवारी
प्रशासनिक अधिकारी
युनाइटेड इंडिया इंश्यूरेंस कंपनी लिमिटेड
दिल्ली प्रादेशिक कार्यालय–1, नई दिल्ली

यादों की आहटें

आहटें सुन रहा हूँ यादों की,
आज भी अपने इंतज़ार में गुम।
बीते हुए लम्हों की तस्वीरें,
आँखों को कर जाती हैं नम।
वो हँसी, वो बातें, वो शरारतें,
हर पल याद आती हैं बार–बार।
तुम्हारे बिना सूना लगता है यह जहाँ,
तुम्हारी तलाश में भटकता हूँ हर दर।
ख्वाबों में देखता हूँ तुम्हें,
जैसे तुम हो अभी मेरे सामने।
जैसे तुम छू लोगे मुझे,
और मिट जाएगा ये सारा गम।
पर सच है कि तुम अब दूर हो,
दिल टूट जाता है ये एहसास कर।
फिर भी उम्मीद है दिल में,
कि एक दिन फिर मिलेंगे हम।
तब तक संभाल कर रखूँगा मैं,
ये यादें जो हैं मेरे पास।
और हर पल सुनता रहूँगा मैं,
आहटें सुन रहा हूँ यादों की,
आज भी अपने इंतज़ार में गुम।

कमल सिंह
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
दि न्यू इंडिया ऐशोरन्स कंपनी लिमिटेड
दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय–2

एक सैनिक की संवेदना

क्या मैंने अपना कर्ज़ चुकाया माँ,
क्या मैंने अपना फर्ज़ निभाया माँ,
मेरे कुछ अरमान अभी बाकी हैं,
अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है,
देश की खुशहाली के लिए कितने काम अभी तो करने हैं,
लोगों में भाई चारा हो, इसके प्रयास हमें ही करने हैं,
तेरी ओर उठी दुश्मन की नज़र को फ़ना करना है,
देश के अंदर बैठे दुश्मन को भी बेपर्दा करना है,
अपनी सरहद पर दुश्मन को न आने देना है,
उसकी हर हरकत का मुँहतोड़ जवाब भी देना है,
अपने हर सैनिक को शौर्य से भरना है,
उनके परिवारों को भी हमको हिम्मत से भरना है,
लेकिन अब मैं जाता हूँ माँ, मेरा प्रणाम स्वीकार करो,
अपने इस बच्चे को माँ, तुम अपना आशीर्वाद प्रदान करो,
फिर से आऊँ, तुम्हीं को पाऊँ, तुमपे जाँ निसार करूँ,
मेरा यही बस एक निवेदन है—माता इसे स्वीकार करो।

सुश्री बबीता चावला
सहायक प्रबंधक,
नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड,
दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय–1

मेरी गोवा यात्रा

परशुराम के बाणों ने जहाँ
सिंधु सागर की लहरों को ललकारा था
मांडवी–जुआरी नदियों ने मिलकर
गोवा को स्वर्गरूपी संवारा था
चमकीली हल्की रेत यहाँ
संस्कृति की छवि पुर्तगाली थी
कोंकणी थी बोली यहाँ
सह्याद्रि की गहरी हरियाली थी
कैंडोलिम, कलंगुट, बागा के तट
पिरोई माला सी बन जाती है
सांझ–सवेरे सागर की लहरें
मनमोहक सी ध्वनि सुनाती हैं
सजी–धजी नाव मछुआरों की
जगमगाते दीपों की दिवाली थी
सागर, बादल, हवा से बातें करते
उनकी हर बात ही मतवाली थी
गिरजा घर, पौराणिक किलों का
ऐसा रोमांच भरा इतिहास था
निर्झरों से जैसे बहता दुग्ध
अलौकिक दृश्य ही ख़ास था।
गोवा की समृद्ध सुंदरता
परमिति में परिमित है
कंक्रीट जंगल जैसा द्वेष नहीं
वहां अप्रवाहों का पानी भी अमृत है।

श्री मृणाल बाग
प्रशा. अधिकारी,
नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड,
दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय–1

आईडीबीआई बैंक लिमिटेड द्वारा हिंदी पखवाड़े का आयोजन

17 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस के अवसर पर आईडीबीआई बैंक लि. के अंचल कार्यालय के द्वारा मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री रंजन कुमार रथ की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। जिसमें वरिष्ठ अधिकारीगण व अंचल कार्यालय के अन्य स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया।

इस दौरान कार्यालय में स्टाफ–सदस्यों के बच्चों के लिए **चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन** किया गया। **चित्रकारी प्रतियोगिता** में **दो संवर्ग थे** एक (11 वर्ष से कम) दूसरा (12 से 20 वर्ष)। दूसरी प्रतियोगिता **'तस्वीर की बात'** रही। जिसमें स्टाफ सदस्यों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान **'एक कलम योजना'** के अंतर्गत स्टाफ सदस्यों को कलम प्रदान कर अपना डेस्क कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित किया।

25 सितंबर 2024 को मुख्य समारोह वाले दिन स्टाफ–सदस्यों के लिए **'आशु भाषण'** एवं **'काव्य पाठ'** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

पुरस्कारों का वितरण संयुक्त रूप से मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री रंजन कुमार रथ जी एवं मुख्य अतिथि डॉ. आर. पी. सिंह जी द्वारा किया गया।

दास्तां–ए–उल्फ़त

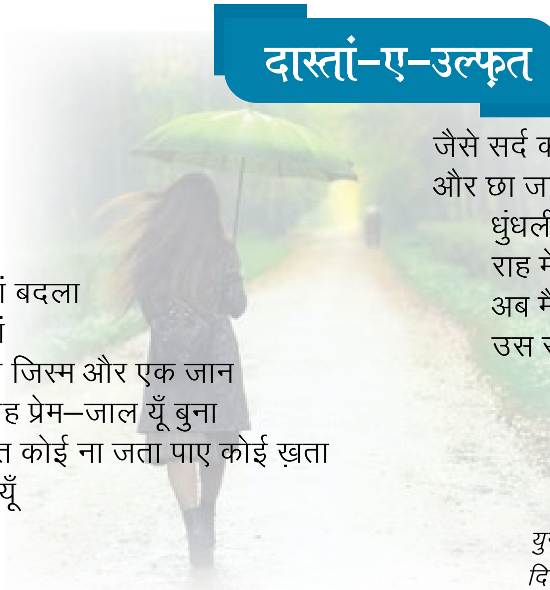

महज इत्तेफ़ाक था या
खुदा की कोई साजिश थी
कड़कती धूप में
तूफ़ाँ–ज़दा बारिश थी,
उसके वजूद ने लम्हां बदला
लम्हे ने बदली दास्तां
खो गए इस कदर दो जिस्म और एक जान
धागे– धागे, मोह–मोह प्रेम–जाल यूँ बुना
ना बता पाए फ़ज़ीलत कोई ना जता पाए कोई ख़ता
फिर रेत सा फिसला वक्त यूँ
काल ने ली करवट नई
जैसे सर्द की रात खत्म
और छा जाए कोहरा कोई
धुंधली हुई तस्वीर अब सारे आईने टूट गए
राह में कांटे भरे, रास्ते भी छूट गए
अब मैं हूँ मेरी तन्हाई है, जो हँसते रोते साथ हैं
उस राह से अब ऊब चुके, नयी मंज़िल की तलाश है।

अश्विनी पाटील बिष्ट
सहायक प्रबन्धक
युनाइटेड इंडिया इंश्यूरेंसकंपनी लिमिटेड
दिल्ली प्रादेशिक कार्यालय–1, नई दिल्ली

छोटे प्रयास का बड़ा बदलाव

श्रीमती किरण जैन
मुख्य प्रबंधक,
जोर बाग, पंजाब नैशनल बैंक,
मंडल कार्यालय (दक्षिणी दिल्ली)

एक बार की बात है, एक छोटा लड़का अपनी धुन में नदी के किनारे टहल रहा था। उसने देखा कि नदी का पानी तेजी से किनारे तक आता और वापस लौट जाता। ऐसा बार–बार हो रहा था। जब नदी का पानी एक हिलोर के साथ बाहर आता, तो अपने साथ कई मछलियों को बहाकर किनारे पर छोड़कर वापस नदी में लौट जाता। किनारे की मछलियां बिना पानी के थोड़ी देर तड़पती और मर जातीं।

इस नज़ारे को देखकर उसे उन मछलियों पर तरस आ गया और उसने अपने छोटे–छोटे हाथों से एक–एक मछली को पकड़कर वापस नदी में फेंकना शुरू किया। कई घंटों तक वह ऐसा ही करता रहा। उसकी मासूमियत और दया के इस प्रयास में, वह पूरी तरह से खो गया था, अपने छोटे हाथों से मछलियों को उठाकर नदी में फेंकते हुए। वह थका हुआ था, लेकिन हर बार जब वह एक मछली को पानी में लौटाता, तो उसकी आँखों में खुशी की चमक आ जाती।

किनारे से कुछ राहगीर निकले और उस बच्चे को ऐसा करते देख हंसने लगे और कहने लगे, ''अरे पागल! ऐसे तू कितनी मछलियों को बचा लेगा?''

लड़के ने कहा, ''ये तो पता नहीं कितनी बचेंगी, लेकिन जो मेरे हाथ में आ गई वो ज़रूर बच जाएगी।''

ऐसा कहकर उसने अपने हाथ की मछली को तेज़ी से पानी में फेंक दिया और फिर दूसरी मछली को उठाने के लिए आगे बढ़ गया। लड़के का यह छोटा सा प्रयास उन राहगीरों के लिए एक बड़ी सीख बन गया। धीरे–धीरे, राहगीरों की भीड़ बढ़ने लगी और लोग उसकी बातों पर विचार करने लगे। एक व्यक्ति ने सोचा, ''अगर एक छोटा बच्चा यह कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं?''

उस व्यक्ति ने अपने जूते उतारे और लड़के के साथ मछलियों को बचाने में शामिल हो गया। उसकी देखा–देखी और भी लोग शामिल होने लगे। अब वहां एक समूह बन गया था, जो मछलियों को उठाकर नदी में वापस डाल रहा था। हर किसी ने मिलकर काम करना शुरू किया, और मछलियों को बचाने का यह कार्य एक सामूहिक प्रयास में बदल गया।

बच्चे की छोटी सी पहल ने पूरे समाज को एकत्रित कर दिया और उन्होंने एक–एक मछली को बचाने का प्रयास किया। कुछ घंटों के बाद, नदी के किनारे पर एक भी मछली नहीं बची थी। सभी मछलियों को वापस नदी में डाल दिया गया था।

लड़का बहुत खुश था और उसकी आँखों में संतोष की चमक थी। उसने अपनी तरफ से जितना संभव हो, उतना किया था, और उसकी छोटी सी पहल ने एक बड़ा बदलाव ला दिया था। वहां मौजूद सभी लोग अब यह समझ चुके थे कि किसी भी बड़े काम की शुरुआत एक छोटे से प्रयास से ही होती है।

लड़के ने सभी को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया था– एक छोटा प्रयास भी बड़ा परिवर्तन ला सकता है। उसके इस छोटे से कार्य ने सभी के दिलों को छू लिया और यह कहानी एक मिसाल बन गई। लड़के की मासूमियत और उसके दृढ़ संकल्प ने सभी को यह सिखाया कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता, बशर्ते वह सच्चे मन से किया जाए।

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि हमें अपने छोटे–छोटे प्रयासों को कभी भी कम नहीं आंकना चाहिए। हर छोटे कदम से बड़े परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण शुरुआत हो सकती है।

आज ही क्यों नहीं ?

हर्षा शर्मा
प्रबंधक,
बैंक ऑफ महाराष्ट्र

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर–सम्मान किया करता था। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घ सूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरूजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन–संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है, तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पाता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा– 'मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा, दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लूँगा।'

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते–करते बीता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर–चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रातः काल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ ज़रूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े–बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा कि अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाज़ार जाकर सामान लेता आएगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूंगा। पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था। अब वह जल्दी–जल्दी बाज़ार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरूजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरूजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर–चूर हो गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयीः उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

मित्रों, जीवन में हर किसी को एक से बढ़ कर एक अवसर मिलते हैं, पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं। इसलिए मैं यही कहना चाहती हूँ कि यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घ सूत्रता को त्याग कर, अपने अंदर विवेक, कष्ट साध्य श्रम, और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये– ''आज ही क्यों नहीं?

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय की राजभाषा गतिविधियाँ

पंजाब नेशनल बैंक, प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली की श्रीमती निधि चौकसे को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए दिल्ली अंचल प्रमुख, श्री जे एस साहनी।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा हिन्दी माह के दौरान आयोजित सुलेख प्रतियोगिता के विजेता श्री बिशन लाल को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए दिल्ली अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा हिन्दी माह के दौरान आयोजित काव्य पाठ प्रतियोगिता की विजेता श्रीमती संगीता भाटिया को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए दिल्ली अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी।

भारतीय जीवन बीमा निगम, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़ा सम्मान समारोह का आयोजन

गुरु

गुरु का परिचय किसी का मोहताज नहीं,
गुरु ईश्वर भी है, केवल मार्गदर्शक नहीं,
गुरु सृष्टि भी है, गुरु जननी भी है,
गुरु मातृभूमि भी है, रूप हैं इनके कई।
पर जिस गुरु को मैं शीष नवाती,
सारी दुनिया उसकी कीमत का पाठ पढ़ाती।
वह काल चक्र के नाम से हैं जाने जाते,
जन्म से लेकर मृत्यु तक हैं साथ निभाते।
वक्त का सिखाया, भूलना ज़रा मुश्किल है जनाब,
अच्छा हो तो हर हक़ीक़त, लगती सुनहरा ख़्वाब।
समय रूपी इस गुरु ने अगर अपना पासा पलटा,
जो सीधा–सीधा चलता है, वह भी हो जाता उल्टा–पुल्टा।
इनके पढ़ाने का ढंग ज़रा विचित्र है,
कर्म नाम के शिक्षक इनके घनिष्ठ मित्र हैं,
कहते हैं दोनों की शिक्षा से कोई ना बच पाया,
जिसने इनको अपनाया,
उसको जीवन का मूल समझ आया।।
वक्त की अच्छी बात है कि ये सख्त है, पर निर्दयी नहीं,
सज़ा भी देता है, मरहम भी लगाता है, छोड़ता यूं ही नहीं।
इस शिक्षक के पाठ को खुले मन से पढ़ो,
और ज़िन्दगी जीने का फ़लसफ़ा इनसे सीख लो,
ज़िन्दगी जीने का फ़लसफ़ा इनसे सीख लो!!

सुश्री सौम्या शुक्ला
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय निर्यात– आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक),
नई दिल्ली कार्यालय

बचपन का सफ़र

हमारा बचपन था मिट्टी में सना,
खुले मैदानों में दौड़ता, फिसलता, हँसता हरा–भरा।
पेड़ों की छाँव तले खेलों की टोली,
कभी छुपम–छुपाई, तो कभी रस्सी कूद का झूला झोली।
कागज़ की नावें, बारिश में तैरती,
हर बूंद संग बचपन की खुशियाँ बहती।
कंचे, गुल्ली–डंडा, लट्टू का खेल,
इनमें थी मस्ती, था अपनत्व का मेल।
अबके बच्चे हैं मोबाइल में मग्न,
हर खेल वर्चुअल, हर जश्न गुम।
बचपन की मिट्टी की महक खो गई,
स्क्रीन की चमक में मासूमियत सो गई।
कभी हमारा बचपन गलियों में खनकता,
हर आँगन में हंसी का सैलाब बहता।
अब चारदीवारी में सिमट गए घर–बार,
बच्चों के पास बस स्क्रीन का सहारा बार–बार।
हम किताबों की दुनियाँ में खो जाते थे,
हर पन्ने में सपनों के रंग पाते थे।
अब गूगल के जवाब हैं हर सवाल पर,
खुद से खोजने की ललक है ना असरदार।
हमारे लिए तारे थे छूने का सपना,
उनके लिए गेम्स में जीतना है अपना।
हमारी दुनिया थी असली और सजीव,
उनकी दुनिया हो गई डिजिटल और अजीब।
समय के साथ बदल गए हैं सफर के रास्ते,
बचपन का मोल अब औरों से भिन्न है।
पर चाहें कितनी भी दूरियाँ आ जाएँ,
बचपन का वो सफर, दिल में सदा मुस्कुराए।

अमित धामा (उपप्रबंधक)
युनाइटेड इंडिया इंश्यूरेंस कंपनी लिमिटेड
दिल्ली प्रादेशिक कार्यालय–1
नई दिल्ली

और हम बड़े हो गए

यार, मैंने बहुत दिल से पापा मम्मी को घर बुलाया था
उनको दो कमरों का अपना छोटा सा घर दिखाया था
अकेले रहते रहते बहुत बोर हो गया था या फिर शायद
अपने बड़े होने, अपने पैरों पर खड़े होने पर गुरूर आया था
मम्मी पापा तो मम्मी पापा हैं अपने सब काम छोड़कर मेरे पास आ गये
अपने लाड़ले बेटे के अनुरोध को ठुकराने के बारे में सोच ही नहीं पाये
पापा, पापा अन्दर आते ही बोले तुम्हारा घर तो बहुत अच्छा है
मां तपाक से बोली होगा, क्यों नहीं होगा जी हमारे बच्चे का है
मुझे पता था कि वो यह सब मेरा दिल रखने को कह रहे हैं, वरना
वो छोटा–सा घर मेरे अपने घर की (पापा के घर की) तुलना में कुछ नहीं था
खैर वो जितने दिन रहे सिर्फ मेरी और घर की तारीफ ही करते रहे
मेरे सामने खुश रहने का अभिनय और मेरे पीछे बाहर निकलने में भी डरते रहे
घर बहुत हवादार है सब्जी मंडी और बाजार घर के बिल्कुल पास है
बालकनी में बैठकर सर्दी में धूप सेंकने का आनंद ही कुछ खास है
बच्चे ने घर और रसोई का सारा सामान लाकर रखा है
हमारी ज़रूरतों और सुख सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा है
और फिर, फिर उनके वापस जाने का दिन भी पास आ गया
मेरे मन में कई तरह के भावों का एक बवंडर सा छा गया
मैं अन्दर ही अन्दर कुछ संतृप्त, कुछ दुखी कुछ खुश, कुछ बेचैन था
मन में कहने को बहुत कुछ था पर शब्दों से बिल्कुल मौन था
मम्मी पापा मेरे घर मेरे काम मेरे रहन–सहन से संतुष्ट दिख रहे थे
पर फिर भी रह रह कर मुझे मेरे घर और काम के बारे में हिदायतें दे रहे थे
रात को उनको गाड़ी में बिठा कर अपने उसी अच्छे घर में वापस आया, पर
शायद अपने बड़े होने अपने पैरों पर खड़े होने का दंभ उनके साथ ही छोड़ आया
सब कुछ तो वैसा ही था, वही था, फिर भी कहीं कुछ तो कम था
यूं ही हाथ लगाकर देखा तो आंखों का कोर भी कुछ नम था
घर का हर कोना जैसे किसी अनजान उदासी से भर गया था
मम्मी पापा का चले जाना मुझे अन्दर तक अखर गया था
मम्मी पापा जब तक थे कभी अपने बड़े होने का अहसास ही नहीं हुआ
उनके साथ एक बार फिर वो बच्चा बन गया जो कभी जवां ही नहीं हुआ
दोस्तो, जब तक मां बाप पास होते हैं उनकी कीमत का अहसास नहीं होता
उनके जाने के बाद फिर ज़िन्दगी में ज्यादा कुछ खोने को नहीं होता
मां बाप आपके जीवन में उस छत या छाते के समान होते हैं, जो
मुश्किल वक्त में आपके साथ होते हैं वरना अपने काम में व्यस्त होते हैं
जब तक वो हैं उनके प्यार और अपनेपन का खूब लुत्फ उठाईये
उनकी खुशियों, मान सम्मान को ही अपने जीवन का ध्येय बनाईये।

नीरज श्रीवास्तव
नई दिल्ली अंचल
बैंक ऑफ इंडिया

विश्वास की राह

योगनी दुबे
प्रबंधक (विधी)
भारतीय स्टेट बैंक
प्रशासनिक कार्यालय 2, नई दिल्ली

जब इंसान सब तरफ से हार जाता है, और हर तरफ उसे निराशा ही हाथ लगती है, तब भी उसे हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, उसे धैर्य एवं ईश्वर में विश्वास रखना चाहिए। इससे उस हारे हुए इंसान को उम्मीद की एक किरण नजर आने लगेगी। धैर्य एवं विश्वास का दामन हमेशा पकड़े रहना चाहिए।

ईश्वर की शरण में रहने से इंसान अकेला होकर भी सब से जीत सकता है, भक्ति और विश्वास से जो ताकत मिलती है इंसान उससे बड़े से बड़े तूफान को भी पार कर सकता है।

जब मरीज के इलाज का रिकवरी रेट कम होता है तो डॉक्टर भी कहते हैं कि अब दुआ ही काम कर सकती है, इन्हें पूरे परिवार के प्यार और दुआ की आवश्यकता है। उम्मीद का दामन थामे रहने से सब जगह काम अपने आप बनने लगते हैं, विश्वास में वह ताकत है जो असंभव को भी संभव कर सकती है। जैसे हर रात के बाद सूर्य का उदय होना निश्चित है, उसी प्रकार खराब समय के पश्चात अच्छे समय का आना भी निश्चित होता है। जब इंसान हिम्मत हारने लगे और उसका साथ निभाने वाला कोई भी न हो, तब उसे तपते सूरज की ओर देखना चाहिए और उससे यह सीख लेनी चाहिए कि अकेले संघर्ष किस प्रकार किया जाता है। इंसान को कभी भी हार नहीं माननी चाहिए, अपनी इच्छा शक्ति को प्रज्ज्वलित रखना चाहिए, इससे हिम्मत ले कर आगे बढ़ते रहना चाहिए। तभी इंसान फिर से दुनिया में अपनी पहचान बना पाएगा और एक दिन सूरज की तरह चमकने लगेगा।

हिम्मत हो तो बड़ी से बड़ी मुश्किल का भी सामना किया जा सकता है। यह मनुष्य का एक विलक्षण गुण है, यदि इसे सही तरीके से प्रयोग किया जाए तो जीवन में चमत्कारी परिवर्तन आते हैं। यह वह स्थिति नहीं जो जन्म से प्राप्त हो, यह तो अनुभव और अभ्यास के साथ इंसान में स्वयं ही विकसित होती है। फहीम जोगापुरी साहब ने क्या खूब फरमाया है

''वाकिफ़ कहाँ ज़माना हमारी उड़ान से
वो और थे जो हार गए आसमान से!
हिम्मत मत खोना बहुत आगे जाना है,
जिसने कहा था तेरे बस का नहीं
उन्हें करके दिखाना है।''

मनुष्य को हर पल इसी विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए कि एक न एक दिन वह अवश्य सफल होगा। समय, मेहनत, आस्था, अनुशासन, धैर्य और आत्मविश्वास वह कुंजी है जिससे असंभव के हर ताले को खोला जा सकता है। तभी तो कहा गया है ''मन को हारे हार है, मन के जीते जीत।''

पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्याल्य द्वारा हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय द्वारा गीत–गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बैंक के प्रधान कार्यालय एवं कॉरपोरेट कार्यालय के स्टाफ सदस्यों ने उत्साहवर्धक रूप से सहभागिता की। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर (महाप्रबंधक), श्री कंवर लाल (उप महाप्रबंधक), श्री राजेश सी पाण्डेय (महाप्रबंधक), श्री नीलेन्द्र के प्रभात (महाप्रबंधक) (बाएं से दाएं क्रम में) शामिल हुए।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक प्रधान, कार्यालय द्वारा हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बैंक के प्रधान कार्यालय एवं कॉरपोरेट कार्यालय के स्टाफ सदस्यों ने उत्साहवर्धक रूप से सहभागिता की। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में श्री हरजिंदर सिंह (उप महाप्रबंधक), श्री दिनेश कुमार गोयल (महप्रबंधक), श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर (महाप्रबंधक), श्री राजेन्द्र कुमार रैगर (महाप्रबंधक) (बाएं से दाएं क्रम में) शामिल हुए।

कुम्हार का माटी प्रेम

सुनैना रेड्डी
सहायक महाप्रबंधक
आईबीडीआई बैंक लि.

गर्मी बहुत बढ़ गई थी, अनु (मेरी सात साल की बिटिया) बोली, मम्मी इस बार हम पानी के लिए घड़ा लेने क्यूं नहीं गए? मुझे उस अंकल को मिट्टी को गोल गोल घुमाना देखना अच्छा लगता है। इस चित्र को देखते ही वह दिन याद आ गया। हम उसी शाम घड़ा लेने गए तो देखा कुम्हार आज भी उसी चाक पर छोटे बड़े घड़े बना रहा था। चाक और मिट्टी के इस खेल को देख कर कबीरदास जी का यह दोहा याद गया....

माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रोंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौदूंगी तोय।।

यही सोचते सोचते घर आ गई तो लगा, मिट्टी बिन बोले बहुत कुछ सिखाती और बताती है। आज का आधुनिक समाज बहुत आगे बढ़ गया, किन्तु समय के चक्र ने एक बार फिर मनुष्य को मिट्टी की सौंधी खुशबू की ओर अग्रसर होने पर मजबूर कर दिया है। लोग बड़े से बड़े होटल में जाकर कुल्हड़ की चाय का ऑर्डर देते हैं। प्लास्टिक और एल्युमिनियम जैसे खतरनाक जाल से हर कोई बाहर निकलना चाहता है। इन विषैली धातुओं से बना सामान न केवल मनुष्य शरीर को अपंग बना रहा है बल्कि कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी को हर घर तक पहुंचा रहा है।

कुम्हार के हाथ की कला और मिट्टी के प्रति उसकी एकाग्रता, उसके हर सामान की कीमत को सोने के समान मूल्यवान कर देता है। कहा भी गया है **"मिट्टी के मटके की कीमत और परिवार की कीमत सिर्फ बनाने वाले को पता होती है, तोड़ने वाले को नहीं"**।

दिवाली के दिए हों या काली पूजा के लिए बनाई गई काली माँ की मूर्ति, इसी धरती माँ की गोद से ली गई मिट्टी से पूर्ण होती है। कुम्हार हिंदुस्तान के हर घर में मनाए जाने वाले त्योहार को अपनी हस्त कला और बेजान मिट्टी से इतना सजीव और सुसज्जित कर देते हैं कि मशीनों से बना सामान फीका लगने लगता है। मिट्टी के गमले, झूमर, मूर्तियाँ, खिलौने हर घर की सुंदरता में चार चाँद लगा देते हैं। बच्चों को आज भी बचत (savings) सिखाने के लिए हर घर में मिट्टी की गुल्लक लाई जाती है।

पुराने समय से ही मिट्टी का प्रयोग बहुत सी बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता रहा है। मिट्टी शीतलता प्रदान करती है। मिट्टी में खेलने वाले बच्चे, 24 घंटे AC में बंद रहने वाले बच्चों से कम बीमार होते हैं। आज यह मिट्टी लोगों का सिर्फ रोजगार नहीं है, यह बड़े व्यवसाय का रूप ले चुकी है। मिट्टी के गुणों की कोई सीमा नहीं है। **मिट्टी और कुम्हार** के प्रेम को नमन करते है.. .. ..

चढ़कर माटी चाक पर, बोली अरे कुम्हार।
चाहे जो आकार दे, अब मुझपर तेरा अधिकार।।

समय और धैर्य, दो सबसे बड़े योद्धा हैं।

हिन्दी पखवाड़ा

नाबार्ड की राजभाषा गतिविधियाँ

नाबार्ड द्वारा हिन्दी पखवाड़े के दौरान ऑनलाइन हिन्दी राजभाषा प्रश्नोत्तरी का आयोजन

नाबार्ड द्वारा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिन्दी समारोह में उपस्थित सभी स्टाफ सदस्य

महाप्रबंधक, नाबार्ड द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण

आईआईएफसीएल की राजभाषा गतिविधियाँ

आईआईएफसीएल द्वारा हिन्दी ज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन

आईआईएफसीएल द्वारा कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

आईआईएफसीएल द्वारा हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

हिंदी उत्सव

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली उत्तर का साझा हिन्दी दिवस समापन समारोह यूनियन बैंक के दिल्ली स्थित सभी कार्यालयों द्वारा सम्मेलित रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम के उपस्थित अंचल प्रमुख, उप अंचल प्रमुख, सभी क्षेत्रों के क्षेत्र प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारियों द्वारा संदर्भ साहित्य का विमोचन भी किया गया।

असमंजस

अचला सावलानी
प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय जीवन बीमा निगम

अपनी इतनी समझदार पुत्री की बात सुनकर मैं हतप्रभ था। वह एक वर्ष पूर्व के अपने वैवाहिक जीवन को समाप्त करके वापस आना चाह रही थी। मुझे इस क्षण अपनी स्वर्गीय पत्नी की कमी की पीड़ा सबसे अधिक महसूस हो रही थी। श्रेया, मेरी पुत्री मेरे सामने अपनी पीड़ा, अपनी भड़ास निकाल रही थी और मेरा दिमाग फ्लैश बैक में चल रहा था।

कितने मन से एक वर्ष पूर्व ही तो श्रेया की पसंद के लड़के आशीष के साथ धूमधाम से विवाह सम्पन्न कराया था। माँ के न होने का दुःख किसी प्रकार कम कर सकूँ, इसलिए बेटी की सारी इच्छाओं के लिए मेरी हाँ ही थी। बड़ी धूमधाम से बड़े–बूढ़ों के आशीर्वाद के साथ जीवन के नए पड़ाव के लिए बेटी की विदाई की थी। अभी तो मैं उसके समारोह की यादों से ही सराबोर था कि बेटी सामने आ कर यह क्या कह रही थी ?

बेटी की रुलाई मुझे वर्तमान में ले आई। मैंने खुद के विचारों को समेटा। कह लेने दिया उसे सब कुछ... जिससे उसके मन का सारा गुबार निकल सके। वही समस्या थी जो आधुनिक समाज में पले बढ़े ज्यादातर बच्चों की होती है।

मल्टीनेशनल कंपनियों में बड़े ओहदों पर काम करते हुए बच्चे वैवाहिक जीवन के समायोजन का अर्थ भी किताबी ज्ञान से ही प्राप्त करना चाहते हैं। हमेशा मैं ही क्यूँ करती रहूँ, मेरी नौकरी भी तो महत्वपूर्ण है, घर की जिम्मेदारी मेरे अकेले की है क्या, जैसे वही वैवाहिक जीवन के आरंभिक दिनों की परेशानियां। मैंने श्रेया के कंधे पर हाथ रखा, पीठ थपथपाई, गले से लगाया। बहुत देर तक रोने के बाद जब वह शांत हुई तो रात्रि का अंधकार अपने पैर पसार चुका था। मैंने उसे मुँह–हाथ धोकर खाना लगाने को कहा। इच्छा तो दोनों की नहीं थी। एक दूसरे का मन रखने को दोनों ने चुपचाप थोड़ा थोड़ा खाना खाया, किन्तु दोनों के ही दिमाग विचारों के झंझावत का सामना कर रहे थे।

खाने के उपरांत मैंने बेटी के कंधे पर हाथ रख कर कहा, ''सो जाओ, सुबह बात करते हैं।"

दोनों अपने अपने कमरे की ओर मुड़ गए परंतु नींद दोनों की आँखों से कोसों दूर थी। मेरा मन बहुत अशांत हो गया था। उस समय मुझे अपनी पत्नी के न होने का एहसास इतना कचोट रहा था कि अनायास ही मेरी पलकें भीग गई।

इतने अनुभवी जीवन के बावजूद स्वयं को इतना असहाय महसूस कर रहा था। विचारों के अंतद्वंद से जूझते कब आँख लग गई पता ही नहीं चला।

सुबह नियत समय पर स्वतः ही आँख खुल गई। समस्या का हल तो नहीं ढूंढ पाया था किन्तु मन अपेक्षाकृत शांत था। कदाचित जब किसी समस्या का हल व्यक्ति को उसकी सोच की परिधि में नहीं मिल पाता तो मन स्वतः ही नियति के सम्मुख नतमस्तक हो जाता है, सब कुछ ईश्वर पर छोड़ देता है।

मैं अखबार में नज़रे गड़ाए बैठा था किन्तु मेरे कान बेटी के कदमों की आहट की बाट जोह रहे थे। कुछ देर के पश्चात श्रेया अपने कमरे से निकलकर मेरे पास ही सोफे पर आकर बैठ गई। मेरे अखबार हटाते ही उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रखा तो मेरा हाथ सहज ही उसके सिर पर चला गया। मैं कुछ नहीं बोला। बस उसे यूं ही बैठे रहने दिया। उसकी सूजी हुई आँखें उसके मन का हाल तो बयान कर ही रहीं थी, मैं क्या ही कहता।

कुछ ही देर में अपने मनोभावों को समेटकर उसने कहा, "पापा, आशीष को फोन करके बुला लो।"

मैंने पूछा, क्या सोचा है?"

उसका जवाब था, "आशीष से बात करनी है।"

अपनी बेटी की समझदारी पर मुझे कभी कोई संदेह रहा ही नहीं। मैंने आगे कुछ पूछना उचित नहीं समझा और कुछ समय के उपरांत आशीष को फोन लगाया।

"कैसे हो बेटा?"

"बस, ठीक हूँ पापा।"

हमेशा प्रफुल्लित सुनाई देने वाला उसका स्वर आज बिना उसके कहे उसके हृदय की वेदना कह रहा था।

"बेटा, आज समय निकाल कर घर आ सकोगे?"

"पापा, मैं आज ऑफिस नहीं जा रहा हूँ। थोड़ी देर में निकलता हूँ।"

जब तक मैं अपनी रोज़ की दिनचर्या से निवृत्त होकर बेटी के साथ नाश्ता करके फारिग ही हुआ था कि आशीष आ गया। मैंने उसे हमेशा की तरह गले लगाकर कहा, "खुश रहो"।

यह बेटी के सुखद वैवाहिक जीवन हेतु एक पिता के मन की चाह भी थी और मंगल कामना भी।

बेटी और दामाद के बीच सर्द मौन को मैं महसूस कर रहा था। बेटी ने ही बात आरंभ की, "आशीष, मुझे तुमसे बात करनी है।'

मैं उन दोनों को ड्राइंग रूम में छोड़कर अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

मेरे मन मुताबिक सभी वस्तुएं, किताबें, क्विज, अखबार, टेलिविजन, गाने, फोन मेरे कमरे में मेरे आसपास थी किन्तु मन में अजीब सी बेचैनी थी। समय काटे नहीं कट रहा था। पत्नी की फोटो को निहारते हुए ईश्वर से हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा था कि प्रभु मेरी बच्ची पर अपनी कृपा बनाए रखना।

एक घंटा कितनी मुश्किल से गुजरा बयान करना कठिन है। श्रेया ने ही दरवाजे पर दस्तक देकर आवाज दी, "पापा"।

मुझे और कुछ पूछने बताने की आवश्यकता ही नहीं थी। आवाज़ की खनक से मैंने अनुभव कर लिया था कि ईश्वर ने मेरी सुन ली है। मैंने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद देते हुए दरवाजा खोला तो बेटी–दामाद खिले चेहरों के साथ सामने खड़े थे।

''पापा, हम मूवी देखने के लिए बाहर जा रहे हैं। लंच पर इंतज़ार मत करना। वापसी में देर हो जाएगी। शाम की चाय के साथ आशीष की पसंद के पकौड़े बनवाकर रखवाना...."

मैं अपनी चिड़िया को फिर से चहचहाते देख मुस्करा रहा था।

प्रकृति की सुंदरता

प्रकृति की सुंदरता अनंत है,
हरियाली की चादर ओढ़ी हुई,
फूलों की खुशबू से भरी हुई,
पेड़ों की हरियाली में खड़ी हुई।

पहाड़ों की विशालता देखो,
नदियों की कल–कल ध्वनि सुनो,
समुद्र की गहराई में जाओ,
प्रकृति की सुंदरता को महसूस करो।

चिड़ियों की चहचहाहट सुनो,
तितलियों की रंगीनी देखो,
फूलों की सुगंध लो,
प्रकृति की सुंदरता को महसूस करो।

प्रकृति हमारी माँ है,
हमें जीवन देने वाली है,
हमें सुरक्षा देने वाली है,
हमें खुशी देने वाली है।

प्रकृति की सुंदरता को देखो,
प्रकृति की सुंदरता को महसूस करो,
प्रकृति की सुंदरता को संरक्षित करो,
प्रकृति की सुंदरता को बचाओ।

संदीप मौर्य
लिपिक,
इंडियन ओवरसीस बैंक

नराकास द्वारा कंठस्थ 2.0 पर कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए हिन्दी माह समारोह एवं छमाही रिपोर्टिंग व कंठस्थ 2.0 पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 06 सितंबर, 2024 को भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय – 2 के सभागार में श्री मनीष सोलंकी, प्रभारी राजभाषा, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक की अध्यक्षता में किया गया।

राजभाषा विभाग, पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय से पधारे वरिष्ठ प्रबन्धक–राजभाषा श्री राजीव शर्मा ने छमाही राजभाषा रिपोर्ट के भाग I और भाग II की मदों पर बिन्दुवार चर्चा करते हुए उपस्थित प्रतिभागियों की शंकाओं का भी निवारण किया।

राजभाषा विभाग, पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय से पधारे वरिष्ठ प्रबन्धक– राजभाषा श्री कमलेश कुमार मिश्र ने कंठस्थ 2.0 पर पंजीकृत किए जाने से लेकर कार्यालय में उसके उपयोग संबंधी मदों पर विस्तृत चर्चा की और प्रतिभागियों की शंकाओं का भी निवारण किया।

हिंदी माह समारोह के अवसर पर उपस्थित प्रतिभागियों के लिए राजभाषा/सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन करके विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की समाप्ति श्रीमती पूनम पुरी, प्रबन्धक– राजभाषा, भारतीय स्टेट बैंक के धन्यवाद ज्ञापन से हुई।

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा हिंदी माह का आयोजन

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा हिंदी माह के आयोजन के अवसर पर प्रतिभागी एवं विजेता राजभाषा अधिकारियों के साथ महाप्रबंधक प्रधान कार्यालय श्री विश्वजीत मिश्र, एफजीएमओ नई दिल्ली, महाप्रबंधक श्री लोकेश कृष्ण, नई दिल्ली अंचल, आंचलिक प्रबंधक श्री अमित सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, श्री धर्मबीर, राजभाषा विभाग की प्रमुख सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री मऊ मैत्रा, वक्ता के रूप में पूर्व सचिव, संसदीय राजभाषा समिति डॉ सत्येंद्र सिंह, पूर्व प्रवक्ता बीएमईएल डॉ नरेश मोहन एवं मुख्य प्रबंधक– राजभाषा नई दिल्ली एवं संयोजक श्री सरताज मो. शकील।

अरुणिमा सिन्हा की अदम्य जिजीविषा

राजेश कुमार
वरिष्ठ सहायक
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि.
क्षे. का. 2 दिलली

अरुणिमा सिन्हा का जन्म 1988 में उत्तर प्रदेश के एक छोटे से शहर अयोध्या में हुआ। बचपन से ही वह एक साहसी और जिज्ञासु लड़की थीं। खेल–कूद में उनकी रुचि ने उन्हें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। अरुणिमा का सपना था कि वह एक दिन अपने देश का नाम रोशन करें। वह अपनी शिक्षा में भी अव्वल थीं, और उनकी माता–पिता ने उन्हें हर संभव सहायता दी।

लेकिन जीवन ने अरुणिमा को एक बहुत बड़ी चुनौती दी। 2011 में, जब वह अपने एक रिश्तेदार के पास दिल्ली जा रही थीं, तो एक दुखद घटना घटी। ट्रेन में यात्रा करते समय, कुछ लुटेरों ने उन पर हमला किया। उन्होंने उनकी कलाई पकड़कर धक्का दिया, जिससे वह ट्रेन की पटरियों पर गिर गईं। इस दुर्घटना में उनकी एक टांग गंभीर रूप से घायल हो गई और डॉक्टर्स को उसे काटने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस घटना ने अरुणिमा के जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। वह अचानक एक ऐसा इंसान बन गई, जिसे चलने में मुश्किल हो रही थी। यह उनके लिए एक बड़ा आघात था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। अस्पताल में रहते हुए, उन्होंने अपनी ताकत और साहस को फिर से खड़ा करने का निर्णय लिया।

अस्पताल से बाहर निकलने के बाद, अरुणिमा ने अपनी ज़िंदगी को एक नई दिशा देने का विचार किया। उन्होंने तय किया कि वह पर्वतारोहण करेंगी। यह उनके लिए एक चुनौती थी, लेकिन उन्होंने इसे अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। अरुणिमा ने अपने नए लक्ष्य के लिए कठोर प्रशिक्षण लेना शुरू किया।

उन्होंने पहले तो छोटे पहाड़ों पर चढ़ाई की, लेकिन उनकी दृष्टि हमेशा ऊँची चोटियों पर थी। उन्होंने अपने प्रशिक्षकों से मदद ली और धीरे–धीरे अपनी स्थिति को सुधारने लगीं। अरुणिमा ने शारीरिक और मानसिक रूप से खुद को तैयार किया और जल्द ही उन्होंने अपने पहले ट्रैकिंग अभियान में भाग लिया।

अरुणिमा की मेहनत और दृढ़ संकल्प ने उन्हें 2013 में भारत की सबसे ऊँची चोटी, माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने का अवसर दिया। वह इस मिशन की पहली भारतीय महिला बन गईं, जिन्होंने कृत्रिम अंग के साथ एवरेस्ट पर चढ़ाई की। यह उनके लिए एक ऐतिहासिक पल था।

जब वह एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचीं, तो उन्होंने केवल एक शिखर नहीं पाया, बल्कि अपने जीवन की सबसे बड़ी सफलता हासिल की। वहाँ खड़े होकर उन्होंने कहा, "यह सिर्फ मेरे लिए नहीं, बल्कि उन सभी के लिए है जो कभी हार नहीं मानते।" उन्होंने साबित किया कि शारीरिक सीमाएँ केवल मानसिकता में होती हैं।

अरुणिमा की कहानी ने लाखों लोगों को प्रेरित किया। उन्होंने उन लोगों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया जो अपने जीवन में चुनौतियों का सामना कर रहे थे। उन्होंने कई कार्यक्रमों में भाग लिया, जहाँ उन्होंने अपने अनुभवों को साझा किया और बताया कि किस तरह उन्होंने कठिनाइयों को पार किया।

अरुणिमा ने "छोटी बातें बड़ी बातें" नामक एक पुस्तक भी लिखी, जिसमें उन्होंने अपने जीवन की यात्रा और संघर्षों के बारे में बताया। यह पुस्तक पाठकों के लिए प्रेरणादायक बन गई।

अरुणिमा केवल पर्वतारोहण तक सीमित नहीं रही। उन्होंने सामाजिक कार्यों में भी भाग लिया। उन्होंने बच्चों और युवाओं को प्रेरित करने के लिए कई कार्यशालाएँ आयोजित कीं। वह विशेष रूप से विकलांग लोगों के अधिकारों के लिए काम कर रही थीं।

उनकी मेहनत और समर्पण ने उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार दिलाए। उन्होंने भारत सरकार द्वारा भी सम्मानित किया गया।

अरुणिमा की कहानी यह सिखाती है कि असली सफलता केवल शिखर पर चढ़ने में नहीं है, बल्कि संघर्ष, समर्पण और सकारात्मक सोच में है। उन्होंने अपनी ज़िंदगी को एक नए रूप में ढाला और साबित किया कि अगर हमारे इरादे मजबूत हों, तो हम किसी भी बाधा को पार कर सकते हैं।

आज अरुणिमा एक प्रेरक वक्ता, लेखक और पर्वतारोही हैं। वह हर दिन नई चुनौतियों का सामना करती हैं और दूसरों को भी प्रेरित करती हैं। उनका जीवन यह बताता है कि असफलता एक अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत होती है।

अरुणिमा सिन्हा की कहानी हमें सिखाती है कि कठिनाइयाँ हमें कमजोर नहीं बनातीं, बल्कि हमें मजबूत बनाती हैं। उन्होंने साबित किया कि असली साहस हार मानने में नहीं, बल्कि आगे बढ़ने में है। उनकी कहानी हर उस व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा है, जो जीवन में चुनौतियों का सामना कर रहा है।

सफलता की यह यात्रा केवल व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि समाज के लिए भी एक संदेश है। अगर हम अपने सपनों के लिए संघर्ष करें, तो कुछ भी संभव है। अरुणिमा सिन्हा ने इस बात को साबित कर दिखाया है, और उनकी कहानी हर किसी के दिल में एक नई उम्मीद जगाती है।

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा दिनांक 22 नवंबर, 2024 को दि न्यू इंडिया एशुरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय – 1 के सहयोग से उनके आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र में श्री कुंजबिहारी श्रीवास्तव, प्रभारी, आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र की अध्यक्षता तथा श्रीमती सुधा चितकारा, क्षेत्रीय प्रबन्धक–राजभाषा की गरिमामयी उपस्थिति में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 22 स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की। कार्यशाला के प्रथम सत्र में पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ प्रबन्धक श्री राजीव शर्मा ने प्रतिभागियों को 'राजभाषा से संबंधित नियमों एवं अधिनियमों' पर व्याख्यान दिया और द्वितीय सत्र में दि न्यू इंडिया एशुरेंस कंपनी लिमिटेड के क्षेत्रीय प्रबन्धक (सेवानिवृत्त) श्री भूपेन्द्र कुमार ने 'अनुवाद' पर व्याख्यान देते हुए अनुवाद की बारीकियों पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र में सभी प्रतिभागियों के लिए 'लघुलेख' की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और अंतिम एवं चतुर्थ सत्र में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यशाला के अंत में आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रभारी श्री कुंजबिहारी श्रीवास्तव ने सभी प्रतिभागियों का, अतिथि संकाय तथा क्षेत्रीय प्रबन्धक – राजभाषा और कार्यालय –1 की राजभाषा अधिकारी श्रीमती आभा शर्मा का इस सफल और ज्ञानवर्धक कार्यशाला के आयोजन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

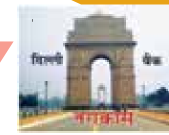

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड–2024 एवं विभिन्न अंतर कार्यालय प्रतियोगिताओं के परिणाम

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता–सदस्य कार्यालय – परिणाम

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा प्रतिवर्ष सदस्य कार्यालयों के लिए 3 अलग–अलग श्रेणियों में राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। वर्तमान में नराकास के कुल 49 सदस्य हैं जिसमें 26 बैंक, 10 वित्तीय संस्थान तथा 13 बीमा कंपनियाँ है। वर्ष 2024 के लिए राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के परिणाम निम्नानुसार है :–

क्र.स.	पुरस्कार	बैंक का नाम	वित्तीय संस्थान का नाम	बीमा कंपनी का नाम
1	प्रथम	इंडियन ओवरसीज़ बैंक	भारतीय रिजर्व बैंक	भारतीय जीवन बीमा निगम
2	द्वितीय	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय	भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का. – 1
3	तृतीय	सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय	भारतीय निर्यात–आयात बैंक	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क. लि., क्षे.का.–2
4	प्रोत्साहन	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली	आईआईएफसीएल	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लि., प्रधान कार्यालय
5	प्रोत्साहन	बैंक ऑफ इंडिया	राष्ट्रीय आवास बैंक	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का. – 4
6	प्रोत्साहन	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली		
7	प्रोत्साहन	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली		
8	प्रोत्साहन	पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली		

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता – पत्रिका – परिणाम

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा प्रतिवर्ष सदस्य कार्यालयों द्वारा वित्त वर्ष के दौरान प्रकाशित गृह पत्रिकाओं एवं ई–पत्रिकाओं के लिए अलग–अलग श्रेणियों में राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। वित्त वर्ष 2023–24 के लिए गृह पत्रिकाओं एवं ई–पत्रिकाओं के लिए राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के परिणाम निम्नानुसार है :–

गृह पत्रिका				ई–पत्रिका	
क्र.स.	पुरस्कार	पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम	पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम
1	प्रथम	आवास भारती	राष्ट्रीय आवास बैंक	सैंट्रल अभिव्यक्ति	सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया – दक्षिण
2	द्वितीय	मेधा	भारतीय रिजर्व बैंक	एक्जिम स्पर्श	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
3	तृतीय	राजभाषा अंकुर	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय	इंद्रप्रस्थ वागर्थ	इंडियन ओवरसीज़ बैंक

बैंक भारती पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं के लिए पुरस्कार

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा प्रकाशित छमाही पत्रिका ''बैंक भारती'' में प्रकाशित सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों की रचनाओं को कविता, कहानी, बैंकिंग संबधित लेख तथा अन्य विषय लेख श्रेणी में मूल्यांकन के आधार पर श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रतिवर्ष पुरस्कृत किया जाता है। ''बैंक भारती'' के दिसम्बर 2023 तथा जुलाई 2024 में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं/रचनाकारों के परिणाम निम्नानुसार है :–

क्र.स.	पुरस्कार	कविता	कहानी	अन्य विषयक लेख	बैंकिंग विषयक लेख
1	प्रथम	**ज़िंदगी – द लाइफ** (शिल्पा बंसल, सहायक प्रबन्धक, इंडियन ओवरसीज़ बैंक)	**बेटी** (राजीव शर्मा, वरिष्ठ प्रबन्धक, पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय)	**मध्य अमेरिकी देशों में घुंघरुओं की गूंज** (सोमा दास, सहायक प्रबन्धक, भारतीय रिजर्व बैंक)	**5 ट्रिलियन इकॉनमी में बैंकों की भूमिका** (सिद्धार्थ गुप्ता, प्रबन्धक, इंडियन ओवरसीज बैंक)
2	द्वितीय	**पहचानो मैं हिंदी हूँ** (सिद्धार्थ गुप्ता, प्रबन्धक, इंडियन ओवरसीज़ बैंक)	**गाँव चले** (शर्मिला कटारिया, मुख्य प्रबन्धक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली)	**देवनागरी लिपि : मानकीकरन एवं चुनौतियाँ** (संदीप मौर्य, वरिष्ठ ग्राहक सेवा सहायक, इंडियन ओवरसीज़ बैंक)	**वित्तीय साक्षरता – शुरूआत घर से** (सोमा दास, सहायक प्रबन्धक, भारतीय रिजर्व बैंक)
3	तृतीय	**रोशनी की भोर** (अतुल कुमार, प्रबन्धक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली)	**रिश्ते और पौधे – एक समान** (अचला सावलानी, भारतीय जीवन बीमा निगम)	**एक भारतीय आत्मा – पंडित माखनलाल चतुर्वेदी** (देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक, पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय)	**बैंकिंग में नैतिकता का महत्व** (श्रुति मलिक, मुख्य प्रबन्धक, बैंक ऑफ बड़ौदा)

दिल्ली बैंक नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान आयोजित अंतर कार्यालय प्रतियोगिताओं के परिणाम

दिल्ली बैंक नराकास के सदस्य कार्यालयों द्वारा नराकास के तत्वावधान में प्रति कैलेंडर वर्ष विभिन्न अंतर कार्यालय हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2024 में कुल 27 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कुल 834 स्टाफ सदस्यों प्रतिभागिता की तथा कुल 150 प्रतिभागियों ने पुरस्कार अर्जित किए। आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रतियोगितावार परिणाम निम्नानुसार है:–

क्र. स.	पुरस्कार	प्रतिभागी का नाम (श्री/सुश्री)	बैंक का नाम
पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र का. द्वारा आयोजित बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता			
1	प्रथम	पूजा अग्रवाल	पंजाब एंड सिंध बैंक, अंचल कार्यालय–1
2	द्वितीय	आकृति	भारतीय रिजर्व बैंक
3	तृतीय	रूपेश कुमार	आईईएफसीएल
4	प्रोत्साहन	प्रमोद कुमार	भारतीय जीवन बीमा निगम
5	प्रोत्साहन	राजीव कुमार कटियार	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का. – उत्तर
6	प्रोत्साहन	कुमकुम	आईडीबीआई बैंक
आईआईएफसीएल द्वारा आयोजित 'हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता' (ई–मेल के माध्यम से)			
1	प्रथम	देवेन्द्र टांक	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
2	द्वितीय	निधि चौकसे	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
3	तृतीय	सौम्या शुक्ला	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
4	प्रोत्साहन	नेहा अग्रवाल	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का.–उत्तरी दिल्ली
5	प्रोत्साहन	रामपाल सिंह	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का.–दक्षिणी दिल्ली
6	प्रोत्साहन	शिल्पा बंसल	इंडियन ओवरसीज बैंक
भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा आयोजित 'सामान्य राजभाषा ज्ञान प्रश्नोत्तरी (ऑनलाइन) प्रतियोगिता			
1	प्रथम	आकृति	भारतीय रिजर्व बैंक
2	द्वितीय	रशमीन कौर	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली उत्तर
3	तृतीय	विनीता कुमारी	केनरा बैंक
4	प्रोत्साहन	शिप्रा शुक्ला	आईडीबीआई बैंक
5	प्रोत्साहन	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय–2
6	प्रोत्साहन	गौरव तिवारी	इंडियन बैंक, दिल्ली मध्य
भारतीय निर्यात–आयात बैंक द्वारा आयोजित 'लोकोक्ति एवं मुहावरा प्रतियोगिता (ऑनलाइन)			
1	प्रथम	रोहित कुमार	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
2	द्वितीय	आदित्य कुमार	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क.लि., प्रादे.का. ।।
3	तृतीय	राजीव कुमार कटियार	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का. – उत्तर
4	प्रोत्साहन	आकृति	भारतीय रिजर्व बैंक
5	प्रोत्साहन	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय–2
6	प्रोत्साहन	अंशिका	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का. – दक्षिण

क्र. स.	पुरस्कार	प्रतिभागी का नाम (श्री/सुश्री)	बैंक का नाम
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित 'श्रुतलेखन प्रतियोगिता			
1	प्रथम	आशीष चतुर्वेदी	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
2	द्वितीय	किरण जैन	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
3	तृतीय	कल्याणी सिंह	बैंक ऑफ बडौदा
4	प्रोत्साहन	संतोष कुमार	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का.–1
5	प्रोत्साहन	प्रमोद कुमार	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का.–4
6	प्रोत्साहन	अचला सावलानी	भारतीय जीवन बीमा निगम
पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली द्वारा आयोजित 'यह चित्र कुछ कहता है (प्रविष्टि द्वारा)' प्रतियोगिता			
1	प्रथम	शिल्पा बंसल	इंडियन ओवसीज बैंक
2	द्वितीय	निधि चौकसे	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, अंचलिक कार्यालय
3	तृतीय	अर्चना भारद्वाज	आईडीबीआई बैंक
4	प्रोत्साहन	रश्मि प्रजापत	केनरा बैंक
5	प्रोत्साहन	राजीव चौहान	राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक नाबार्ड
6	प्रोत्साहन	सुनैना रेड्डी	आईडीबीआई बैंक
पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली द्वारा आयोजित 'बैंकिंग जगत में सामान्य जागरूकता प्रतियोगिता'			
1	प्रथम	प्रियंका गुप्ता	पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली
2	द्वितीय	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय–2
3	तृतीय	कुणाल प्रशांत	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का. – दक्षिण
4	प्रोत्साहन	रक्षित रुस्तगी	न्यू इंडिया एश्योरेंस क. लि. – 1
5	प्रोत्साहन	कुनाल अरोड़ा	भारतीय रिजर्व बैंक
6	प्रोत्साहन	विद्या भूषण	इंडियन बैंक
पंजाब नैशनल बैंक, उत्तरी दिल्ली द्वारा आयोजित 'हास्य व्यंग्य कविता (स्वरचित) प्रतियोगिता			
1	प्रथम	नीरज कुमार	पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली
2	द्वितीय	स्वाति जोनाथन महात्मा	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया – दक्षिण
3	तृतीय	सोमानी माल मीणा	बैंक ऑफ महाराष्ट्र
4	प्रोत्साहन	हरिओम	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
5	प्रोत्साहन	देवेन्द्र कुमार	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क. लि. – 2
आईडीबीआई बैंक द्वारा आयोजित 'मन की बात प्रतियोगिता			
1	प्रथम	मोनिका सिंह	इंडियन बैंक
2	द्वितीय	पंकज बंसल	आईआईएफसीएल
3	तृतीय	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय–2
4	प्रोत्साहन	संदीप मौर्य	इंडियन ओवरसीज बैंक
5	प्रोत्साहन	जूली एक्का	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया – दक्षिण द्वारा आयोजित 'बैंकिंग विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता'			
1	प्रथम	गुंजन यादव	इंडियन बैंक – मध्य दिल्ली
2	द्वितीय	सरस्वती	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया – दक्षिण
3	तृतीय	विशाखा सिंघल	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया – आंचलिक कार्यालय
4	प्रोत्साहन	संदीप मौर्य	इंडियन ओवरसीज बैंक
5	प्रोत्साहन	आशीष गर्ग	आईआईएफसीएल

क्र. स.	पुरस्कार	प्रतिभागी का नाम (श्री/सुश्री)	बैंक का नाम
राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा आयोजित 'हिन्दी नारा (स्लोगन) लेखन प्रतियोगिता			
1	प्रथम	संजय गुप्ता	भारतीय रिजर्व बैंक
2	द्वितीय	मीनाक्षी डेंबला	भारतीय जीवन बीमा निगम
3	तृतीय	इन्दु अरोड़ा	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 1
4	प्रोत्साहन	किरण जैन	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
5	प्रोत्साहन	सत्यजीत साहू	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
6	प्रोत्साहन	मोहम्मद राशिद	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 1
राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा आयोजित 'हिन्दी निबंध प्रतियोगिता' (ई–मेल द्वारा)			
1	प्रथम	अजय डी. नायक	राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक
2	द्वितीय	नीति जैन	बैंक ऑफ इंडिया
3	तृतीय	रश्मि वर्मा	भारतीय स्टेट बैंक –1
4	प्रोत्साहन	सबिता पात्र	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
5	प्रोत्साहन	श्वेता कुमारी	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क. लि. – 2
नैशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय–1 द्वारा आयोजित 'कहानी अधूरी करें इसे पूरी' प्रतियोगिता			
1	प्रथम	हर्षा शर्मा	बैंक ऑफ महाराष्ट्र
2	द्वितीय	रितु अग्रवाल	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क. लि., क्षे. का.–2
3	तृतीय	शिल्पा बंसल	इंडियन ओवरसीज बैंक
4	प्रोत्साहन	निधि चौकसे	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
5	प्रोत्साहन	रुचि गुप्ता	बैंक ऑफ बड़ौदा
भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण द्वारा 'हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता			
1	प्रथम	सताक्षी सिंह	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 2
2	द्वितीय	सिद्धार्थ गुप्ता	इंडियन ओवरसीज बैंक
3	तृतीय	अनुज शर्मा	भारतीय जीवन बीमा निगम
4	प्रोत्साहन	हर्षा शर्मा	बैंक ऑफ महाराष्ट्र
5	प्रोत्साहन	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय–2
6	प्रोत्साहन	प्रमोद कुमार	भारतीय जीवन बीमा निगम
नैशनल इंश्योरेंस क० लि० – 4 द्वारा 'स्वरचित हिंदी कविता लेखन' प्रतियोगिता (प्रविष्टि द्वारा)			
1	प्रथम	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय–2
2	द्वितीय	योगेश कुमार	नैशनल इंश्योरेंस क० लि० –1
3	तृतीय	सुचित्रा नयन	इंडियन बैंक – मध्य
4	प्रोत्साहन	प्रभा मल्होत्रा	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क० लि० – 2
5	प्रोत्साहन	दिनेश पूर्वे	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया – उत्तर
6	प्रोत्साहन	इन्दु अरोरा	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 1
पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली द्वारा आयोजित स्वरचित हिंदी कहानी प्रतियोगिता'			
1	प्रथम	आकांक्षा	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय–2
2	द्वितीय	संजय गुप्ता	भारतीय रिजर्व बैंक
3	तृतीय	नीती जैन	बैंक ऑफ इंडिया
4	प्रोत्साहन	शिल्पा बंसल	इंडियन ओवरसीज बैंक
5	प्रोत्साहन	अभिलाषा सिंह	पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली

क्र. स.	पुरस्कार	प्रतिभागी का नाम (श्री/सुश्री)	बैंक का नाम
इंडियन ओवरसीज बैंक द्वारा आयोजित "सफलता की कहानी" प्रतियोगिता (प्रविष्टि द्वारा)			
1	प्रथम	गौरव धाम	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
2	द्वितीय	वीरेंद्र मनराल	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
3	तृतीय	नेहा कुमारी	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
4	प्रोत्साहन	संजना यादव	आईडीबीआई बैंक लि०
5	प्रोत्साहन	राजेश उपाध्याय	युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क० लि० – 1
6	प्रोत्साहन	सरिता चौधरी	दि न्यू इंडिया इंश्योरेंस क० लि० – 2
इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक द्वारा आयोजित "अर्थव्यवस्था संबंधी लेख" प्रतियोगिता			
1	प्रथम	अवधेश शर्मा	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
2	द्वितीय	चाँद सिंह	नैशनल इंश्योरेंस क० लि०, क्षे० का० – 1
3	तृतीय	सोनाली राणा	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
4	प्रोत्साहन	घनश्याम गुप्ता	आईएफसीआई लि०
5	प्रोत्साहन	भाविका पोपली	बैंक ऑफ बड़ौदा
भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय – 1, द्वारा "राजभाषा एवं शब्दज्ञान" प्रतियोगिता (ऑनलाइन)			
1	प्रथम	सौरभ कुमार	बैंक ऑफ बड़ौदा
2	द्वितीय	आकृति	भारतीय रिजर्व बैंक
3	तृतीय	अजीत कुमार सिंह	बैंक ऑफ बड़ौदा
4	प्रोत्साहन	रक्षित रुस्तगी	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क० लि०– 2
5	प्रोत्साहन	प्रमोद कुमार	भारतीय जीवन बीमा निगम
6	प्रोत्साहन	सुमन कुमार	इंडियन बैंक – मध्य
दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क० लि०– 2 द्वारा आयोजित "स्वरचित हिंदी कविता पाठ" प्रतियोगिता (ऑनलाइन)			
1	प्रथम	संजय गुप्ता	भारतीय रिजर्व बैंक
2	द्वितीय	इन्दु अरोरा	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 1
3	तृतीय	अंशिका श्रीवास्तव	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण
4	प्रोत्साहन	अरुण कुमार	ओरिएंटल इंश्योरेंस क० लि०, प्रधान कार्यालय
5	प्रोत्साहन	अमित साहू	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित "कार्टून देखो कहानी लिखो" प्रतियोगिता (प्रविष्टि द्वारा)			
1	प्रथम	तारीक अनवर	इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक
2	द्वितीय	केशव सिंह	इंडियन ओवरसीज बैंक
3	तृतीय	सारिका श्रीवास्तव	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दक्षिण
4	प्रोत्साहन	काछिन्द कुमार	ओरिएंटल इंश्योरेंस क० लि० – प्रधान कार्यालय
5	प्रोत्साहन	सौरभ तिवारी	युनाइटेड इंडिया इंश्योरेस क० लि० – 1
6	प्रोत्साहन	संजय कुमार	आईडीबीआई बैंक लि०
बैंक ऑफ महाराष्ट्र द्वारा "स्मृति प्रतियोगिता"			
1	प्रथम	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय – 2
2	द्वितीय	मोहम्मद राशिद	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 1
3	तृतीय	विमला मेहरा	भारतीय जीवन बीमा निगम
4	प्रोत्साहन	आशुतोष	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
5	प्रोत्साहन	डॉ० सुभाष खोला	नैशनल इंश्योरेंस क० लि० – 4

क्र. स.	पुरस्कार	प्रतिभागी का नाम (श्री/सुश्री)	बैंक का नाम
बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा "संस्मरण लेखन प्रतियोगिता" (प्रविष्टि द्वारा)			
1	प्रथम	मोहम्मद राशिद	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 1
2	द्वितीय	सोनल गुटगुटिया	आईआईएफसीएल
3	तृतीय	सौरभ तिवारी	युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क० लि० – 1
4	प्रोत्साहन	प्रशांत कुमार यादव	दि ओरिएंटल इंडिया इंश्योरेंस क० लि०
5	प्रोत्साहन	अरबिंद कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय –2 द्वारा "चित्र परक अभिव्यक्ति" प्रतियोगिता (ऑनलाइन)			
1	प्रथम	राज कुमार सचदेव	भारतीय स्टेट बैंक –1
2	द्वितीय	शिल्पी यादव	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
3	तृतीय	तनय वर्मा	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय – 2
4	प्रोत्साहन	संजय गुप्ता	भारतीय रिजर्व बैंक
5	प्रोत्साहन	के.एस.एल. अपर्णा	सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया – दक्षिण
6	प्रोत्साहन	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय – 2
बैंक ऑफ इंडिया द्वारा "बैंकिंग एवं राजभाषा ज्ञान" प्रतियोगिता (ऑनलाइन)			
1	प्रथम	पंकज बंसल	आईआईएफसीएल
2	द्वितीय	विन्नी शर्मा	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
3	तृतीय	आकृति	भारतीय रिजर्व बैंक
4	प्रोत्साहन	राजेश्वर सिंह	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
5	प्रोत्साहन	सुर्ये मणि यादव	आईआईएफसीएल
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया – उत्तर द्वारा "रचनात्मक लेख" प्रतियोगिता (प्रविष्टि द्वारा)			
1	प्रथम	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय – 2
2	द्वितीय	शितांश कुमार शिवेश	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया – नई दिल्ली
3	तृतीय	रवि वरिन्द्र पाल सिंह	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
4	प्रोत्साहन	सुनैना रेड्डी	आईडीबीआई बैंक
5	प्रोत्साहन	पारुल अस्थाना	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस क० लि०
भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक द्वारा "अंतर बैंक हिंदी व्यंग्य कविता" प्रतियोगिता (प्रविष्टि द्वारा)			
1	प्रथम	सुदेश कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय – 2
2	द्वितीय	इन्दु अरोड़ा	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड – 1
3	तृतीय	कपिल भरीजा	भारतीय रिजर्व बैंक
4	प्रोत्साहन	उमा गुप्ता	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क० लि० – 1
5	प्रोत्साहन	मीनाक्षी डेंबला	भारतीय जीवन बीमा निगम

सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई

पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक सेमिनार एवं अखिल भारतीय नराकास अध्यक्ष सम्मेलन में ”पीएनबी प्रवाह” का विमोचन करते हुए श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, तथा सुश्री अंशुली आर्या, आईएएस, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री के.पी. शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय –1 और बैंक के अन्य उच्चाधिकारीगण।

दिल्ली बैंक नराकास की 60वीं छमाही समीक्षा बैठक के अवसर पर नराकास की छमाही पत्रिका ''बैंक भारती'' के 31वें अंक का विमोचन करते हुए संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग डॉ. मीनाक्षी जौली, कार्यकारी अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास, श्री राजीव जैन, उप निदेशक, क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय उत्तर–1, श्री कुमार पाल शर्मा तथा सदस्य सचिव श्रीमती मनीषा शर्मा।

हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 14-15 सितंबर 2024

राजभाषा हीरक जयंती

भारत मंडपम, नई दिल्ली

पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक!
punjab national bank
...the name you can BANK upon!